चन्दामामा

अगस्त १९६५

75 P

For the first time in India the revolutionery electronic engraving machine in action

VARIO KLISCHO GRAPH

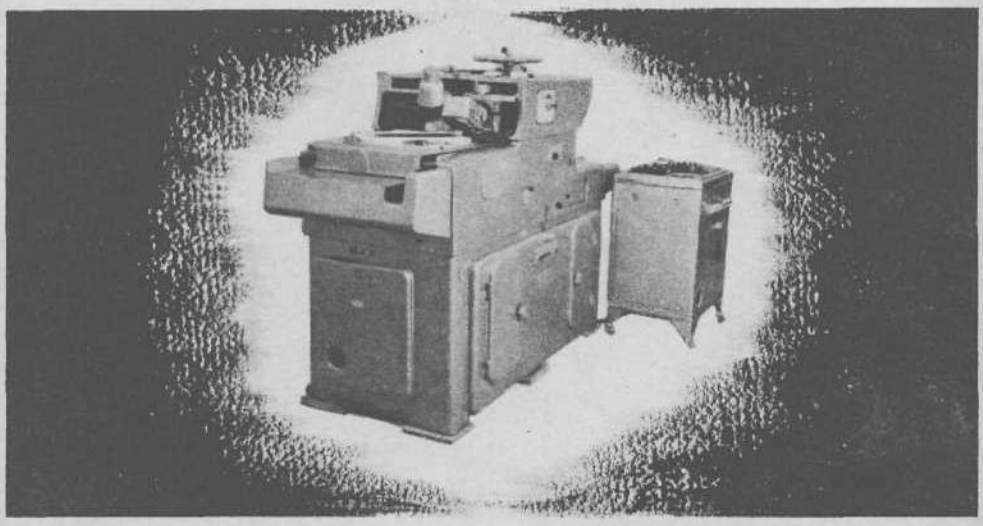

WHAT IT MEANS TO YOU

Block making time reduced from days to a few hours ▪ Electronic control of gradation and detail sharpness ▪ Electronic adjustment of colour correction

CHANDAMAMA PRESS - CHANDAMAMA BUILDINGS - MADRAS-26

बच्चों के लिये
स्वास्थ्यवर्द्धक
टॉनिक

लाल-शर

(डाबर बालामृत)

बच्चों के सुन्दर स्वास्थ्य और शारीरिक विकास के लिये मन-पसन्द मीठी पुष्टई।

८२ वर्षों से जन-कल्याण
में संलग्न

डाबर

(डा० एस० के० बर्म्मन) प्राइवेट लि०,
कलकत्ता-२९

चन्दामामा

अगस्त १९६५

संपादकीय	१
भारत का इतिहास	२
नेहरू की कथा	५
दुर्गेशनन्दिनी (धारावाहिक)	९
अनिर्दिष्ट कार्य	१७
चार बाण	२३
ठिंठाकराल	३३
अपात्र को दान	४१
स्वयं सेवक	४६
युद्धकाण्ड (रामायण)	४९
औतम मनु की कथा	५७
संसार के आश्चर्य	६१
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता	६४

राम की पसन्द

जन्म दिवस शुभ हो,
राम क्या क्या उपहार मिले किसका उपहार सबसे अच्छा है?
मुझे तो राज का दिया हुआ नुसेकोस प्लास्टिकलें बहुत अच्छा लगा है मेरे ममी पापा भी इससे बहुत खुश हैं क्योंकि इससे खेलते हुए मैं उन्हें तंग नहीं करता।
उससे खेलने में मेरा मन भी बहुत लगता है ज़रा देखो मैंने क्या क्या बना डाला है।
नुसेकोस
प्लास्टिकलें
PLASTINLEY
बच्चों के लिये एक खिलौने बनाने का अद्भुत रंग बिरंगा मसाला जो बार-बार काम में लाया जा सकता है। १२ आकर्षक रंगों में सर्वत्र प्राप्त है।
नर्सरी स्कूल व होम इक्विपमैन्ट कम्पनी
पोस्ट बाक्स नं १४१६, दिल्ली-६

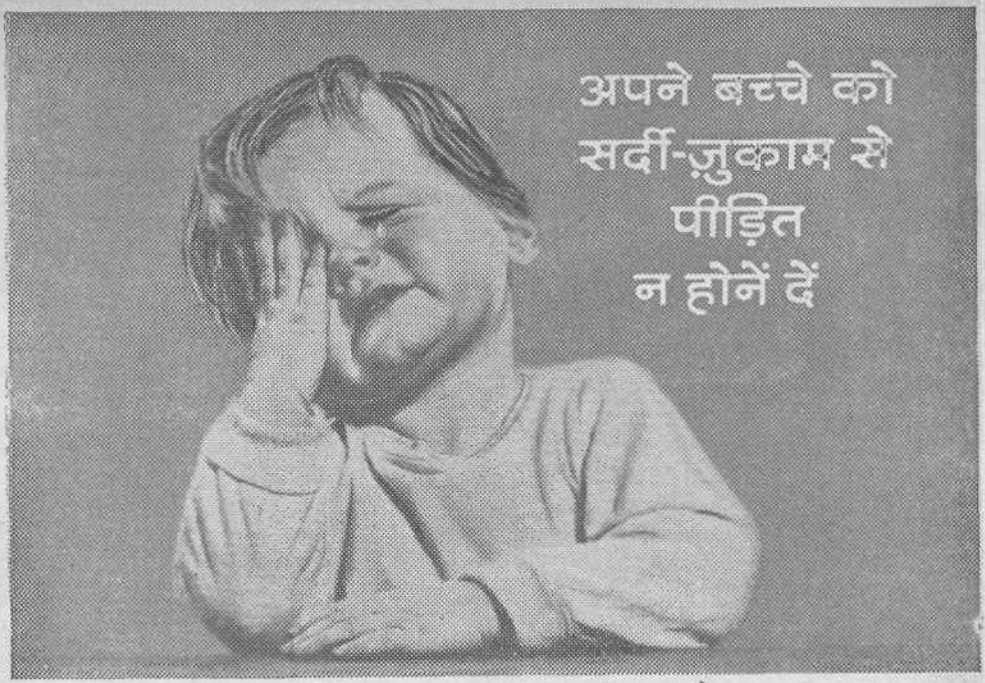

विक्स वेपोरब तुरन्त आराम पहुंचाता है...
आपका बच्चा आसानी से सांस ले सकता है...वह रात भर आराम से सो सकता है।

आपके बच्चे की सुख-सुविधा आप पर ही निर्भर है। इस लिए जब आपके बच्चे में सर्दी-ज़ुकाम के आरम्भिक लक्षण दिखायी दें, जैसे नाक का बहना, आंखों से पानी गिरना, गले का बैठ जाना, सांस लेने में तकलीफ, तो विक्स वेपोरब मलिये।

विक्स वेपोरब आपके बच्चे के सर्दी-ज़ुकाम का सर्वोत्तम इलाज है क्योंकि यह सर्दी से प्रभावित उन सभी भागोंपर, जैसे नाक, छाती और गले में, जहां सर्दी की पीड़ा सबसे ज़्यादा होती है, असर करता है और आपके बच्चे की कोमल त्वचा को इससे तनिक भी क्षति नहीं पहुंचती।

बस विक्स वेपोरब मलिये और अपने बच्चे को कम्बल ओढ़ा कर आराम से बिस्तरपर सुला दीजिये। विक्स वेपोरब अपना काम करता रहेगा। जबकि आपका बच्चा रात भर चैन की नींद सोता रहेगा। सुबह तक सर्दी-ज़ुकाम की पीड़ा जाती रहेगी और आपका लाडला मुन्ना स्वस्थ और हंसता-खेलता उठेगा।

विक्स वेपोरब ३ साइज़ में

V V 464

दिलीप और साथी

सरकस देखने गये

उफ़ ! मैं हँसी नहीं रोक सकता !
मेरा तो पेट ही फट जायेगा !
ये मसख़रे कितने अजीब हैं !
अ ऽ ऽ ऽ हा ! देखो ! कितना सुन्दर सफेद घोड़ा है !
अशोक, आईस-क्रीम खाना बंद करो और देखो कि यह आदमी किस तरह उन तमाम तश्तरियों को छड़ी पर घुमा रहा है !
क्या मज़े का सरकस है !
बड़ी जल्दी खतम हो गया !
मैं बड़ा हो जाऊँगा तो सरकस में काम करूँगा !
वे तुम्हें कभी लेंगे ही नहीं !
जल्दी ! चलो, हम उस बस को पकड़ें !
हाय राम ! बस के किराये का सारा पैसा मैंने गिरा दिया !
ऐसी भीड़ में पैसा मिल भी नहीं सकता !
किस्मत अच्छी है कि मैं अपना 'एवरेडी' टॉर्च ले आया हूँ ! यह देखो — मिल गये पैसे !
एक 'एवरेडी' टॉर्च बराबर साथ रखिये ! पता नहीं कब उसकी ज़रूरत पड़े !

WTUC 2240

साठे

बिस्कुट

इतने स्वादिष्ट कि बस पूछिए ही नहीं !

मेट्रिक प्रणाली एकमात्र कानूनी प्रणाली - मेट्रिक प्रणाली एकमात्र कानूनी प्रणाली - मेट्रिक प्रणाली एकमात्र कानूनी प्रणाली

मेट्रिक प्रणाली ही कानूनी प्रणाली है

खरीदारी केवल

किलोग्राम

मीटर

लिटर

में ही कीजिये

DA 64/676

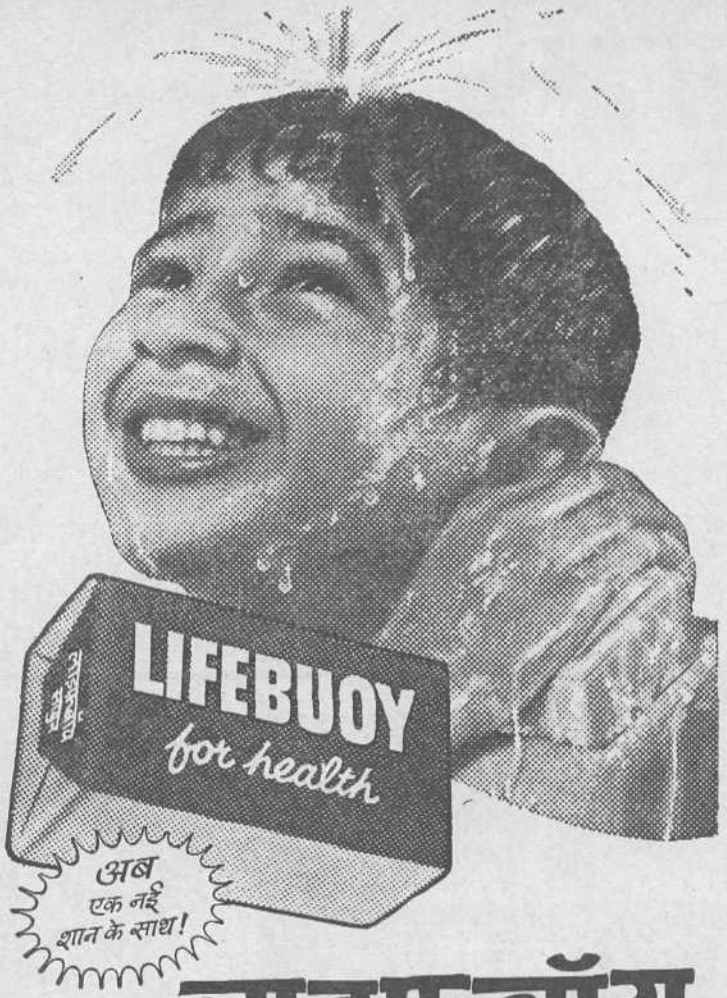

लाइफ़बॉय

है जहाँ
तंदुरुस्ती है वहाँ

हिंदुस्तान लीवर का उत्पादन

L. 47-77 HI

गृहतुल्य निवास और स्वादिष्ट भोजन के लिए

न्यू माड़र्न होटल

शाकाहारी - बोर्डिन्ग - लाज्ड़िग - रेस्टोरेंट

डायगनल रोड़, विश्वेश्वरपुरं, बेन्गलोर - ४.

(मिनर्वा सर्कल के समीप)

कमरे सुन्दर रूप से सज्जित, दिन रात बहता ठंड़ा और गरम पानी

डिन्नर और टी पार्टी के लिए विशेष कमरे भी हैं।

फोन: ७२८४९ और २७६६०

यकृत के विकार ?

इसे दीजिये

जम्मी का लिवरक्योर

बच्चों के यकृत व
प्लीहा विकारों की मशहूर दवा

जम्मी वेंकटरमण्या एंड सन्स, मद्रास - ४

शखाए : बम्बई - ४; कलकत्ता - ७; दिल्ली - ६; नागपुर - १;
लखनऊ; पटना - ४; आदि।

JV-16 (N) HIN

२५ से अधिक वर्षों से लोकप्रिय

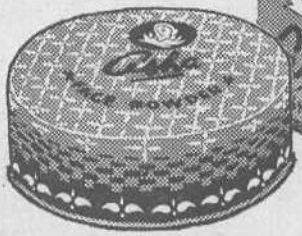

सोल
डिस्ट्रिब्यूटर्सः
जे. एल. मोरिसन,
सन एण्ड जोन्स
(इण्डिया) प्राइवेट लि.
बम्बई – दिल्ली – मद्रास
कानपुर – कलकत्ता

Asha

आशा स्नो, फेस पाउडर, काजल तथा अन्य सौंदर्य प्रसाधन

Unique-M-2-HD

बिन्नी का डी ३१८ कपड़े की कहानी, माँ और बच्चों की ज़बानी

माँ की जबानी :

डी ३१८ बहुत टिकनेवाला बड़े काम का कपड़ा है —स्कूल की वर्दी के लिये इससे अच्छा कोई नहीं— लड़कों की धींगा-मस्ती का इस पर असर नहीं पड़ता।

बच्चों की ज़बानी :

वर्दी पहने हुए भी जब हम खेल-कूद मचाते हैं तो माँ बुरा नहीं मानतीं—वे जानती हैं कि यह बराबर टिकी रहेगी।

याद रखिये कि डी ३१८ सारे देश के स्कूलों की जरूरतों को पूरा करने के लिये खासकर चुने तरह तरह के रंगों में मिलता है।

अपनी जरूरत के बिन्नी के कपड़े नियंत्रित मूल्यों में अधिकार प्राप्त बिन्नी स्टाकिस्टों से खरीदिये जिनकी दुकान पर यह साइन बोर्ड है।

दि बकिंघम ऐण्ड कर्नाटक कंपनी लिमिटेड, बिन्नी ऐण्ड कंपनी लिमिटेड, मद्रास की सहायता प्राप्त

JWT/BY 3127A

सारे परिवार के स्वास्थ के लिये फॉसफोमिन

फॉसफोमिन विटामिन बी काम्प्लेक्स तथा मल्टिपल ग्लियसरोफासफेट से युक्त एक उत्कृष्ट टॉनिक है जो आपके परिवारको बलवान खुश और स्वस्थ रखेगा। फॉसफोमिन के सेवनसे थकावट और कमजोरी का नामोनिशान नहीं रहेगा। फॉसफोमिन थकावटको मिटाता है। भूक बढाता है। आन्तरिक बल बढाता है। शरीर को बलवान बनाता है। हर फल के स्वादवाले विटामिन टॉनिक... फॉसफोमिन से आपके सारे परिवारका स्वास्थ बना रहेगा।

सीखने में देर क्या सवेर क्या!

नन्हे बालक जल्द ही सीख जाते हैं कि पौधे पानी से ही जिन्दा रहते और बढ़ते हैं। यह साधारण सत्य एक बार सीखने के बाद भूलता नहीं।

आप अपने बच्चों को अब दूसरा सबक सिखाइये कि दांतो व मसूढ़ों की रक्षा कैसे करनी चाहिये जिससे वे बड़े होकर आपका आभार मानेंगे कि सड़े गले दांत व मसूढ़ों की बीमारियों से आपने उन्हे बचा लिया।

आज ही अपने बच्चों में सबसे अच्छी आदत डालें — उन्हे दांतो व मसूढ़ों की सेहत के लिये फोरहन्स टूथपेस्ट इस्तेमाल करना सिखायें। एक दांत के डाक्टर द्वारा निकाला गया फोरहन्स टूथपेस्ट संसार में एक ही है जिसमें मसूढ़ों की रक्षा के लिये डा. फोरहन्स द्वारा निकाली गई विशेष चीजें हैं। इसके हमेशा इस्तेमाल से दांत सफेद चमकने लगते हैं और मसूढ़े मजबूत होते हैं। "CARE OF THE TEETH AND GUMS", नामक रंगीन पुस्तिका (अंग्रेजी) की मुफ्त प्रति के लिये डाक-खर्च के १० पैसे के टिकट इस पते पर भेजें: मॅनर्स डेन्टल एडवायजरी ब्यूरो, पोस्ट बैग नं. १००३१, बम्बई-१.

COUPON C.1

Please send me a copy of the booklet
"CARE OF THE TEETH AND GUMS"

Name _____

Address _____

_____

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

इस अंक के साथ "दुर्गेशनन्दिनी" उपन्यास समाप्त हो रहा है। यह बंगाल के मान्य लेखक स्व. बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय का लोकप्रिय उपन्यास है और भारत के आदि उपन्यासों में एक है।

हमारे पाठकों ने इसको इतना पसन्द किया है कि वे चाहते हैं कि बंकिम की अन्य कृतियों का भी धारावाहिक प्रकाशन हो।

ऐतिहासिक उपन्यासों का अपना विशेष महत्व होता है। ये प्रायः इतिहास के महान पुरुषों के महत्वपूर्ण घटनाओं पर आधारित होते हैं। इनमें हमें उदात्त, उपकारी मूल्यों की झाँकी मिलती है। हम यथासम्भव भविष्य में भी ऐतिहासिक उपन्यास देने का प्रयत्न करेंगे।

वर्ष: १६ अगस्त १९६५ अंक: १२

अकबर की मौत के एक सप्ताह बाद आगरा में सलीम, नूरुद्दीन महम्मद जहाँगीर बादशाह ग़ाजी नाम से गद्दी पर बैठा। सब का समर्थन पाने के लिए उसने बहुत-से काम किये।

तब जहाँगीर की उम्र ३६ वर्ष की थी। बादशाह के गद्दी पर बैठने के कुछ दिनों बाद ही उसके बड़े लड़के खुस्रो ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया। खुस्रो पर अकबर को और मामा मानसिंह को बहुत प्यार था। अकबर के मरने के पहिले ही खुस्रो और उसके पिता के बीच ठीक पटती न थी।

पिता के गद्दी पर आये पाँच ही महीने हुए थे कि खुस्रो आगरा से पंजाब भाग निकला और वहाँ जाकर उसने बगावत शुरु कर दी। जहाँगीर बड़ी सेना लेकर अपने लड़के पर हमला करने निकला।

दोनों में लड़ाई हुई। खुस्रो हार गया। वह भरे दरबार में पिता के सामने लाया गया। पिता ने उसको डाँटा और उसे कैद की सज़ा दी। उसके साथियों को सता सता कर मारा गया। १६२२, तक खुस्रो जेल में रहा और नाना तकलीफ़ें झेलकर वहीं मर गया।

१६११ मई महीने में, जहाँगीर ने नूरजहाँ से विवाह किया था। उसका असली नाम मिहरुन्निसा था। उसका सताहवीं वर्ष की उम्र में अलीकुलीबेग इस्तझी नाम के एक फारसी से विवाह हुआ था। इसने बंगाल में एक जागीर पाई थी और शेर अफगान का खिताब भी पाया था।

परन्तु यह शेर अफगान कुछ कुछ बगावत करने लगा। उसको सज़ा देने के लिए जहाँगीर ने कुतुबुद्दीन को सेना के साथ भेजा। युद्ध में कुतुबुद्दीन तो मारा गया, परन्तु उसके आदमियों ने मिहरुन्निसा के पति के टुकड़े टुकड़े कर दिये। मिहरुन्निसा अपनी बच्ची के साथ जहाँगीर के महल में आयी। चार साल के बाद उसने बादशाह से शादी ही न की, परन्तु उसकी बड़ी बेगम भी बनी। पति ने उसको "नूरजहाँ" (संसार का प्रकाश) नाम दिया। नूरजहाँ अत्यन्त सुन्दर थी, कलाप्रिय और बुद्धिमती थी, परन्तु सब से अधिक प्रिय उसको शक्ति थी। उसने अपने पति को पूरी तरह वश में कर लिया। पिता और भाई को बड़े बड़े पद दिलवाये। उसने अपने पहिले विवाह की लड़की का, जहाँगीर के सब से छोटे लड़के से शादी करके उसने अपनी सूझबूझ और भी अच्छी तरह दिखाई।

जहाँगीर के समय कुछ मुख्य विजय मुगलों को प्राप्त हुईं। बंगाल में अफगान १६१२ तक पथ का काँटा बने हुए थे। उस्मान खान के नेतृत्व में अफगानों की बगावत, १२ मार्च १६१२ में समाप्त कर दी गई थी। सिर पर चोट खाकर उस्मानखान मर गया था। इसके बाद बेन्गाल में अफगानों ने सिर न उठाया। इसी तरह मेवाड़ भी जहाँगीर के समय पहिली बार मुगलों के आधीन हुआ था।

दक्खिन में अहमद नगर मुगलों के हाथ में आया ही नहीं। मुगल सेनायें अहमदनगर से बहुत दिनों तक युद्ध करती रहीं। इस युद्ध के चलानेवालों में युवराज खुर्रम भी था। १६१६ में जब इसने कुछ समय के लिए अहमद नगर के किले पर

कब्जा कर लिया, तो पिता ने खुश होकर उसको शाहजहाँ का खिताब दिया। उसे और भी बहुत से उपहार दिये। करोड़ों रुपया खर्च हुआ। हज़ारों आदमी मारे गये। परन्तु दक्खिन में जो सीमा १६०५ में थी, उससे एक इन्च आगे नहीं बढ़ी।

यह सोच कि नूरजहाँ अपने दामाद शहर्यार को पिता के बाद गद्दी पर बिठा देगी, शाहजहाँ ने पिता के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। परन्तु १६२३ में वह हार गया। १६२५ में उसने पिता से सुलह कर ली। अपने लड़के दाराशिकोह, औरंगजेब को राजधानी भेजकर वह अपनी पत्नी मुमताज महल के साथ अपने सब से छोटे लड़के मुराद को लेकर नासिक में रहने लगा।

शाहजहाँ की हार का कारण महावत खान था। वह अपने बुद्धिबल से तरक्की करता आया था। उसकी उन्नति पर डाह करके नूरजहाँ ने उसको नीचा दिखाना चाहा। महावत खान ने बगावत की। जहाँगीर जब काबुल जा रहा था, तब उसने उसको पकड़ लिया। झेलम नदी के तट पर उसे कैद में डाल दिया। नूरजहाँ बचकर भाग गई। उसने अपने पति को छुड़ाने के लिए बहुत कोशिश की। पर कामयाब नहीं हुई। आखिर, वह पति से कैद में जा मिली।

महाबत खान की आँखों में धूल झोंककर जहाँगीर और नूरजहाँ भाग निकले। महाबत खान ने शाहजहाँ के यहाँ शरण ली। परन्तु कुछ दिनों बाद २८ ओक्टोबर १६२७ को बादशाह जहाँगीर मर गया। उसका रावी नदी के किनारे, शाहदरे में सुन्दर मकबरा बनाया गया।

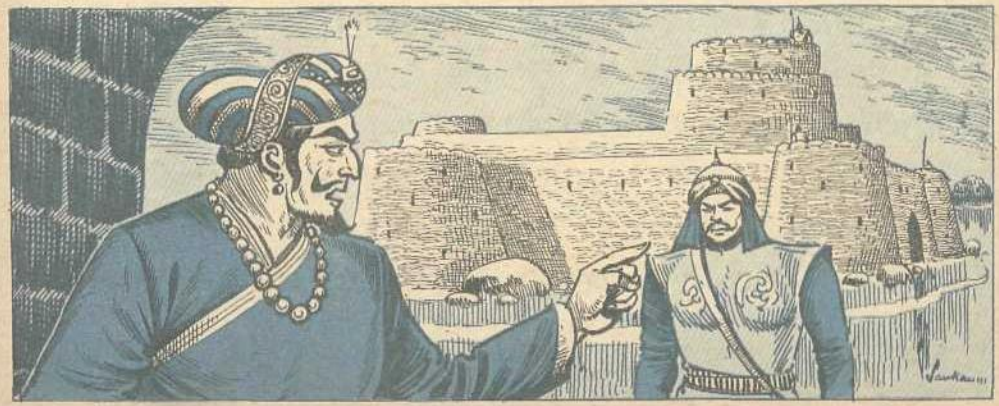

नेहरू की कथा

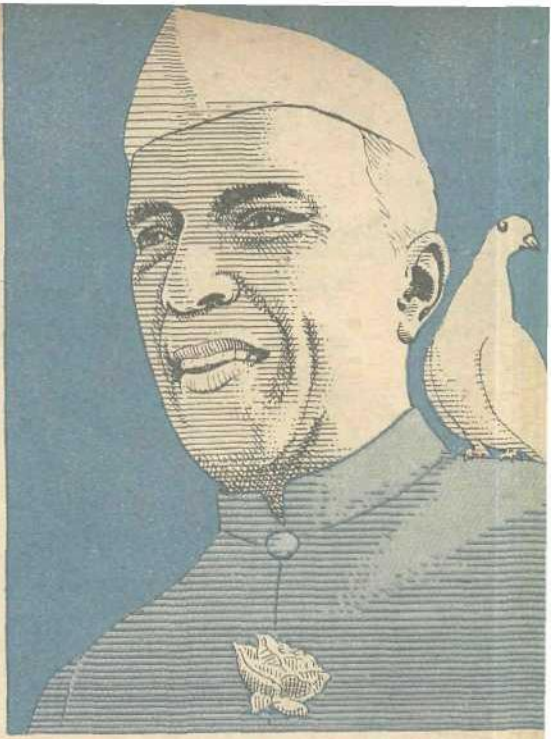

[१३]

किसान इन आन्दोलनों द्वारा अपनी शक्ति को कुछ कुछ जान सके। किसान महासभायें हुईं। उनमें कई बार साठ और सत्तर हज़ार आदमी हाज़िर हुए। वे उन सभाओं में उपस्थित होने के लिए बिना टिकट के रेल गाड़ियों में यात्रा करते और जब रेल के अधिकारी पूछताछ करते, तो कहा करते—"ज़माना बदल गया है।" बिना टिकट के रेल गाड़ी में सफर करने के लिए उनसे किसी ने कहा नहीं था।

१९२० के अन्त में एक घटना घटी। यह जब हुई तब जवाहरलाल नेहरू कलकत्ता कान्ग्रेस के अधिवेषन में गये थे। कोई अपराध थोप कर कुछ किसान नेताओं को पोलीस ने गिरफ्तार कर लिया था। प्रताप नगर में उनकी सुनवायी होनी थी। जिस दिन सुनवायी होनी थी, उस दिन हज़ारों किसान चीटियों की तरह प्रताप गढ़ पहुँचे। वे कोर्ट में भरे हुए थे। कोर्ट के आँगन में थे। जेल से कोर्ट तक का रास्ता उनसे भरा पड़ा था। मेजिस्ट्रेट घबरा गया। उसने सुनवायी अगले दिन तक मुल्तवी कर दी। अगले दिन भीड़ और बढ़ गई। आखिर, पोलीस को किसान नेताओं को छोड़ना पड़ा।

इस घटना से किसानों में काफ़ी आत्म विश्वास आ गया। उन्होंने सोचा कि कोई ऐसी बात न थी, जिसे वे न कर सकें। पर सरकार कैसे उनका बढ़ता बल देखती?

१९२१ जनवरी में जवाहर जब, नागपुर कान्ग्रेस के अधिवेषन से अलहाबाद आये, तो राय बरेली से तार आया कि स्थिति बड़ी विकट हो रही है, जवाहर तुरत आयें।

हुआ यह था कि कुछ किसानों को गिरफ्तार करके राय बरेली जेल में रखा गया था, जैसे उन्होंने प्रताप नगर में किया था, वैसे ही, वे यहाँ भी अपनी शक्ति आजमाना चाहते थे। परन्तु इस बार सरकार पहिले से ही सतर्क थी। किसानों को राय बरेली न आने देने के लिए, पहिले से ही अतिरिक्त पोलीस और फौज तैनात कर दी गयी थी।

किसानों में से बहुत-से लोग, शहर के बाहर नदी के इस पार रोक दिये गये थे। परन्तु और दिशाओं में से भी किसानों के जत्थे आ रहे थे। रेल से उतरते ही, जवाहरलाल नेहरू को इस परिस्थिति के बारे में बताया गया। वे तुरत नदी की ओर गये। रास्ते में उनको जिला मेजिस्ट्रेट का आर्डर दिखाया गया। उसमें जवाहरलाल नेहरू को वापिस जाने के लिए कहा गया था। जवाहरलाल नेहरू ने उनके हुक्म के कागज़ के पीछे लिखकर भेज दिया कि जब तक उनको यह नहीं बताया जायेगा कि किस कानून की किस धारा के अन्तर्गत उनको यह हुक्म दिया जा रहा था, वे अपना कार्यक्रम न छोड़ेंगे।

वे नदी के पास पहुँच रहे थे कि उनको गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। पुल पर उन्हें फौजियों ने रोक दिया। नदी के इस पार कुछ किसान पौधों के पीछे छुपे हुए थे। वे उनको देखकर चारों ओर आ खड़े हुए। जवाहरलाल ने वहीं, दो हज़ार किसानों की सभा बुलवायी। उनको बताया कि वे उतावले न हों, डरें न। कुछ दूरी पर फौज़ किसानों पर गोली छोड़ रही थी और यहाँ ये मीटिन्ग हो रही थी? इसका कुछ अच्छा परिणाम हुआ। किसानों का भय जाता रहा।

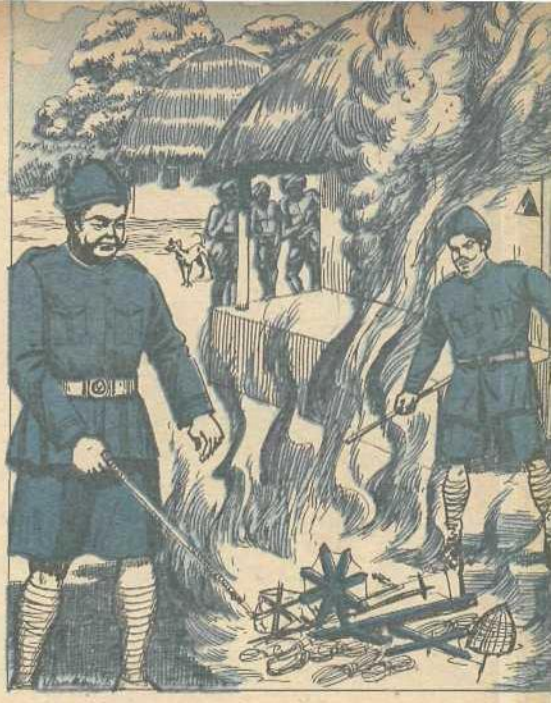

इतने में मेजिस्ट्रेट जहाँ गोली चल रही थी, वहाँ से, जवाहर के पास आया। उनको अपने घर ले गया और किसी न किसी बहाने दो ढ़ाई घंटे अपने घर ही रखा। उसका इरादा यही था कि जवाहरलाल न शहर में अपने अनुयायियों से मिलें, न नदी के पास किसानों को ही देखें।

इस गोलीकाण्ड में, सुना गया कि बहुत से किसान मारे गये थे। सिवाय अधिकारियों की वापिस जाने की आज्ञा धिक्कारने के उन्होंने कुछ न किया था। कोई हिंसापूर्ण कार्य नहीं किया था। "मैं, नहीं तो उनका कोई और विश्वासपात्र, उनसे जाने के लिए कहता तो वे चले गये होते। अधिकारियों की आज्ञा मानना, उनको ठीक न जंचा।" जवाहरलाल ने यह लिखा था। किसी ने मेजिस्ट्रेट को यह बताया था कि जब तक जवाहरलाल नेहरू न आ जायें, तब तक कोई कार्यवाही न की जाये। परन्तु उसने नहीं सुनी। जो काम एक मेजिस्ट्रेट न कर सका, वह एक नेता कर दिखाये, तो उसके पद का कितना बड़ा अपमान है?

तब से किसानों पर सरकारी कर्मचारियों के अत्याचार बढ़ने लगे। किसानों ने अदालतें जाना छोड़ दिया और पंचायत बनाकर, अपने झगड़ों का फैसला करने लगे। किसान नेता और पंचों को गिरफ्तार करके सरकार ने किसानों को डराने की कोशिश की। किसानों के घरों में नये आये हुए चरखे, विद्रोह के चिन्ह माने जाने लगे। सरकार ने उनको जलवा दिया और जिन्होंने चरखे रख रखे थे, उनको गिरफ्तार कर लिया। यह अत्याचार राय बरेली और प्रताप नगर में अधिक हुआ।

१९२१ में फैजाबाद जिले में, सरकार का दमन एक और तरीके से शुरु हुआ।

कुछ ग्रामवासियों ने एक तालुकेदार की मिल्कियत लूट ली। बाद में मालूम हुआ कि एक और ज़मीन्दार के कहने सुनने पर यह कहा गया था कि गान्धीजी ने यह लूट करने के लिए कहा था। इन लोगों ने लूटते हुए "महात्मा गान्धीजी की जय" के नारे भी लगाये।

यह सुन जवाहर को गुस्सा आया। उन्होंने तुरत फैजाबाद जिले के, अकबरपुर के ईलाके में जाकर, एक सभा की व्यवस्था की। आसपास के दस मील दूरी से पाँच छः हज़ार ग्रामवासी, उस सभा में उपस्थित हुए। उन्होंने साफ़-साफ़ कहा कि इस तरह के काम, देश द्रोह के काम थे। अपमानजनक थे। जिन जिन्होंने यह डकैती की है, जवाहरलाल ने कहा, वे सामने आकर, अपना अपराध स्वीकार करें और आश्चर्य यह कि पोलीस के सामने ही दो दर्जन आदमियों ने हाथ ऊपर उठाया। उनको अच्छी खासी सज़ा मिली।

उन ग्रामवासियों को कुछ नहीं मालूम था। जब जवाहरलाल नेहरू को मालूम हुआ कि उन विचारों ने वह सब किसी के बहकाने पर किया था, तो वे बड़ी दुःखी हुए और इसका परिणाम यह भी हुआ कि इसे बहाना बनाकर, सरकार ने आन्दोलनों का दमन कर दिया। हज़ार से अधिक आदमी एरेस्ट किये गये। जेलों में भीड़ हो गयी। एक साल से अधिक सुनवायी हुई। सुनवायी खतम होने से पहिले, जेल में कई मर गये। कुछ लड़कों को लम्बी सज़ायें मिलीं। जब जवाहर स्वयं जेल में गये, तब उन्होंने उनमें से कुछ को देखा।

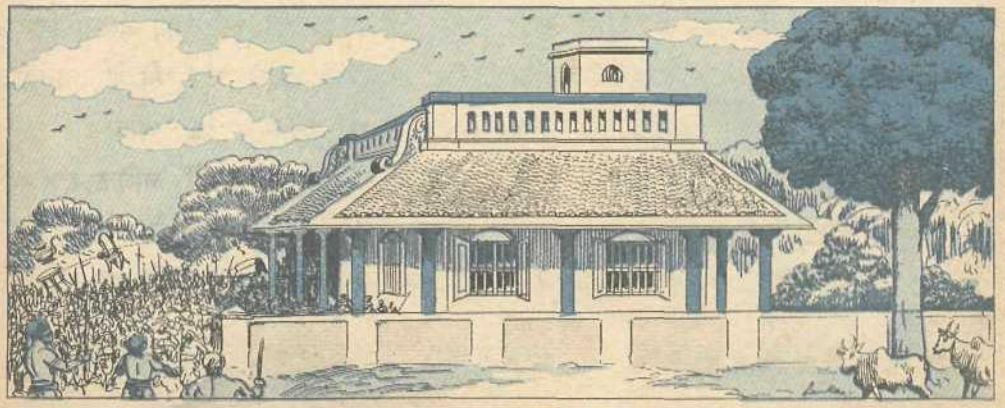

[१४]

अगले दिन जगतसिंह के पास अयाशा ने दूत द्वारा एक पत्र भेजा।

"राजकुमार! मैं तुमसे मिलकर बात न कर सकी। इसका कारण उस्मान का क्रोध और कष्ट ही था। मेरे न मिलने के कारण, शायद तुम नाखुश नहीं हुए होगे। इस कारण जो मुझे कष्ट हुआ है, मैं उसको जैसे-तैसे सह रही हूँ। मैं यह पत्र तुम्हें यह बतलाने के लिए लिख रही हूँ कि तुम यह भूल जाओ कि मैं तुम्हें प्रेम करती हूँ। मैं तुम्हारे प्रेम के योग्य नहीं हूँ। जो कुछ मैं तुम्हें दे सकती थी, वह पहिले ही मैंने दे दिया है। मैं तुम से कुछ नहीं चाहती, मैंने तुम्हारी दुरवस्था अपनी आँखों देखी है। जब तुम्हारे अच्छे दिन आयें, तब मुझे खबर देना। जब तुम्हें अत्यन्त दुःख हो, तब तुम अयाशा को याद करोगे न?"

"तुम यह देश छोड़कर जा रहे हो, पठान शान्त स्वभाव के नहीं हैं। इसलिए हो सकता है कि तुम्हें इस देश में फिर आना पड़े। तब मैं तुम्हें नहीं दिखाई दूँगी। बहुत सोचने विचारने के बाद ही मैं इस निर्णय पर पहुँची हूँ। जब तुम्हारा

विवाह हो, तब मुझे बताना, मैं स्वयं वह विवाह करवाऊँगी। तुम्हारी होनेवाली पत्नी के लिए गहने इकट्ठे करके रखूँगी। मौका मिलने पर, मैं तुम्हारी पत्नी को स्वयं उनसे सजाऊँगी। जब यह मालूम हो कि अयाशा मर गई है, तो मैं चाहती हूँ कि तुम इस देश में आओ। मैंने जो तुम्हारे लिए सन्दूकों में रख रखा है, उसे स्वीकार करो, यही मेरा निवेदन है और कुछ नहीं लिखूँगी।"

—अयाशा

इस पत्र का जगतसिंह ने यूँ उत्तर दिया।

"अयाशा, तुम स्त्रियों में रत्न जैसी हो। तुम्हारे पत्र का मैं अभी कोई जवाब नहीं दे सकता। इसका मुझे बड़ा अफसोस है। मुझे भूलना मत। यदि जीवित रहा, तो तुम्हें एक वर्ष बाद चिट्ठी लिखूँगा।"

यह उत्तर देकर जगतसिंह ने अयाशा के दूत को भेज दिया।

मुगलों और पठानों की सन्धि के बाद, वीरेन्द्रसिंह की पत्नी, लड़की और उनके साथ के अभिरामस्वामी और अस्मानी का क्या हुआ, यह किसी को न पता लग सका। उनको खोजने के लिए महाराजा मानसिंह ही नहीं, उस्मान, ख्वाजा ईसा ने भी बहुत प्रयत्न किया, पर वे सफल न हुए।

आखिर मानसिंह ने मन्थारण दुर्ग में एक विश्वासपात्र व्यक्ति को रखा और उसको हिदायत दी कि विमला या तिलोत्तमा का पता लगते ही उनको मन्थारण सौंपकर वह चला आये। मानसिंह इसके बाद, अपनी छावनी उठाने की तैय्यारी करने लगा।

सेना को कल कूच करना था कि जगतसिंह ने वह पत्र निकालकर पढ़ा, जो उस दिन पेड़ों के झुरमुट में उसके घोड़े के माथे पर बाँध दिया गया था।

"धर्म का पालन करके अथवा ब्राह्मण के शाप का शिकार होकर ही सही, यह पत्र देखते ही, फिर यहाँ आओ। मैं एक ब्राह्मण हूँ।"

यह पत्र देख जगतसिंह को आश्चर्य हुआ। उसे यह भी सन्देह हुआ कि कहीं यह शत्रुओं की चाल तो नहीं थी। जो भी हो, उसने आखिर, उस उजड़े किले के पास जाने का निश्चय किया। उसने अपने लोगों से कहा—"यदि मैं ठीक समय पर न आ पाऊँ, तो मेरी प्रतीक्षा न करना और आगे चले जाना। मैं रास्ते में, तुमसे कहीं मिल जाऊँगा।" जब वह फिर उजड़े किले के पास गया, तो वहाँ कब्र और चिता वैसे की वैसी ही थी। परन्तु चिता पर, एक दुःखी ब्राह्मण बैठा था।

"क्या आपने ही मुझे बुलाया है?" जगतसिंह ने यह पूछा। ब्राह्मण अभिरामस्वामी को पहिचान कर कहा—"आप यहाँ क्यों बैठे है? क्यों दुःखी हैं?"

"तुम्हें जिसके लिए बुलाया है, उसी के लिए दुःखी हूँ। तिलोत्तमा मर रही है।" अभिरामस्वामी ने कहा।

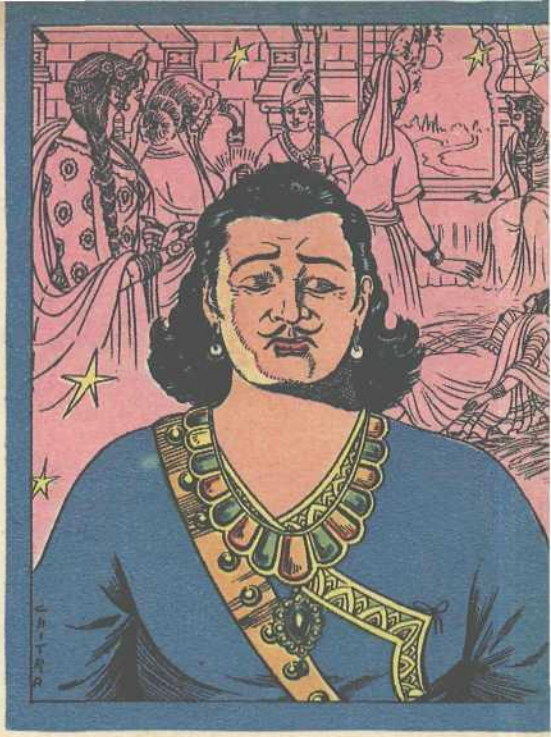

जगतसिंह की आँखों के सामने यकायक कई दृश्य आ गये। जब से उसने पहिले पहल शैलेश्वरालय में देखा था और कैद में उसके रुठे व्यवहार तक—सब घटनायें उसको याद हो आयीं और उसका हृदय प्रेम में उफनने लगा।

"विमला ने जब नवाब को मार दिया, तो मैं, अपनी लड़की और नाती को लेकर, तरह तरह के वेष बदलकर बिना किसी के जाने, इधर उधर मारा मारा फिरता रहा तभी तिलोत्तमा को बीमारी हुई। उसके रोग का कारण, शायद तुम जानते ही हो।

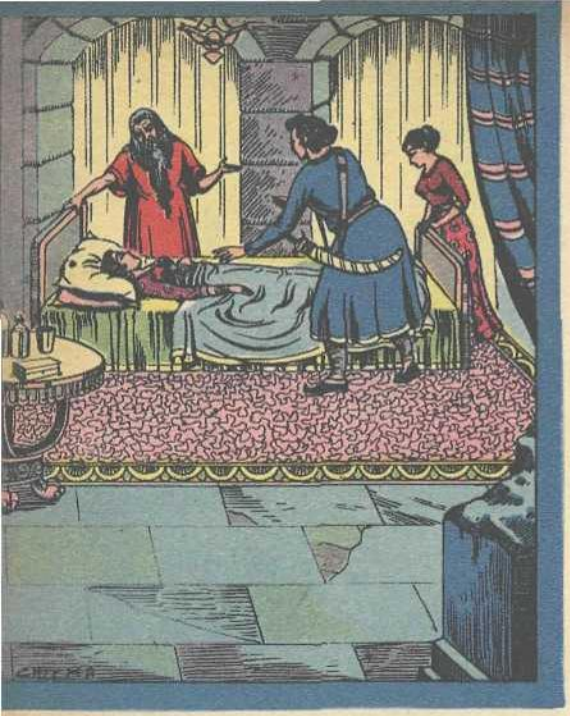

मुझे बहुत-सी औषधियाँ आती हैं। मैंने कई बीमारियाँ ठीक भी की हैं। परन्तु यह बीमारी, दवाइयों से ठीक होनेवाली नहीं है। मैं पाँच दिनों से यहीं हूँ। एक बार तुम्हें यूँ ही अचानक आया देख, तुम्हारे घोड़े के गले में एक चिट्ठी बाँधी थी। मैंने सोचा था कि यदि तिलोत्तमा के प्राणों को खतरा हुआ, तो आखिर समय में तुम दोनों को मिला दूँगा। तब उसकी हालत इतनी खराब न थी, इसलिए ही तुम्हें मैंने समय दिया था। अब तिलोत्तमा के जीवित रहने की उमीद नहीं है। उसका जीवन दीप बुझने को है।" कहता अभिरामस्वामी रोने लगा। उसके साथ, जगतसिंह भी दुःखी होने लगा।

अभिरामस्वामी ने उससे कहा—"यकायक, उसके सामने जाना खतरनाक है, उसे पहिले यह बताकर कि तुम आये हो, मैं तुम्हारे पास खबर भेजूँगा। तब तुम आना।" वह उजड़े किले के अन्दर गया, थोड़ी देर बाद उसने उसको बुलाया।

अन्दर एक कमरे में, एक पलंग पर तिलोत्तमा आँखें मूँदे हुए लेटी हुई थी। विमला विधवा के वेश में, उसके शरीर पर कुछ लगा रही थी। जगतसिंह तिलोत्तमा के पलंग के पास जाकर खड़ा हो गया।

"तिलोत्तमा जगतसिंह आया है।" अभिरामस्वामी ज़ोर से चिल्लाया। तिलोत्तमा ने आँखें खोलकर, जगतसिंह को कुछ देर देखा, फिर नज़र मोड़ ली। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी। यह देख जगतसिंह विह्वल हो उठा, वह उसके पैरों के पास बैठ गया और आँसुओं से उसके पैर गीले करने लगा।

दिन बीत गये। रात दिन जगतसिंह तिलोत्तमा की सेवा शुश्रूषा करने लगा।

सेना क्या हुई ? छावनी उठाकर सब पटना पहुँचे थे कि नहीं, उसकी कोई इन्तजार कर रहे थे कि नहीं ? इन सबके बारे में उसे फिक्र न थी। एक सूखी बेल को अपने आँसुओं से सींचकर, फिर हरा भरा करने की कोशिश में वह लगा रहा। तिलोत्तमा जिस बीमारी की शिकार थी, उसके लिए सिवाय प्रेम के कोई और औषधी न थी। वह धीमे धीमे तन्दुरुस्त होने लगी।

तिलोत्तमा पलंग पर उठकर बैठे सकती थी। विमला की अनुपस्थिति में दोनों प्रेमियों ने एक दूसरे से बातचीत करके, खबरें जान ली थीं। पछतावा और माफी वगैरह भी हो हागई थी।

एक दिन शाम को अभिरामस्वामी एक कमरे में जब बैठा पुस्तक पढ़ रहा था, तो जगतसिंह उसके पास आया।

"महाशय! अब तिलोत्तमा यात्रा कर सकती है। अब इस उजड़े किले में रहने से क्या फायदा ?" जगतसिंह ने पूछा। अभिरामस्वामी ने किताब बन्द की और अत्यन्त खुशी में उसको गले लगा लिया।

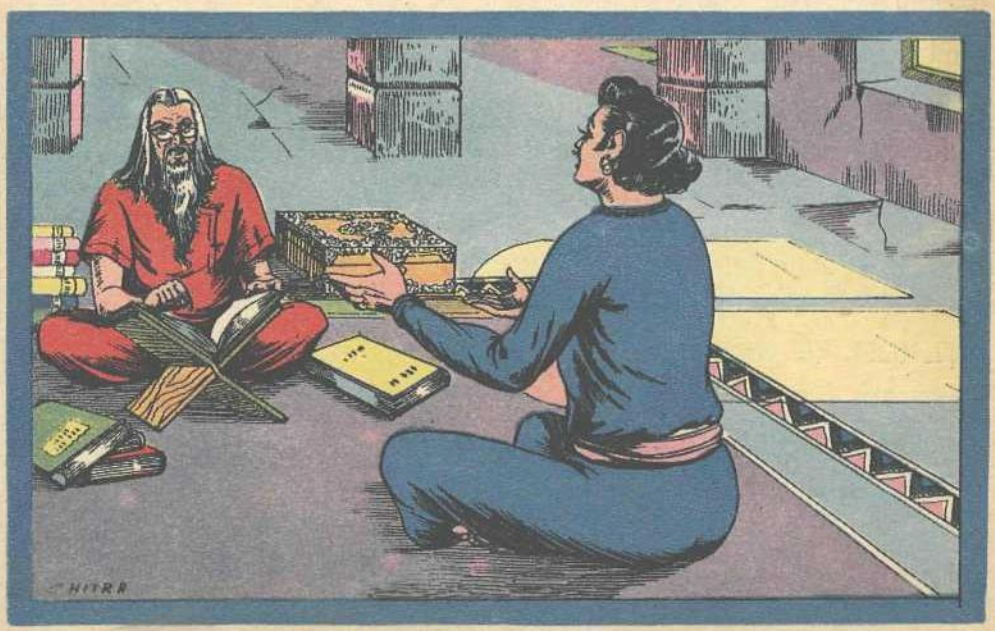

जल्दी ही अभिरामस्वामी मन्थारण किले में गया और अपनी नातिन का उसने बड़े वैभव के साथ जगतसिंह से विवाह किया।

विवाह के लिए जगतसिंह ने जहानाबाद अपने मित्र और बन्धुओं को बुलवाया। तिलोत्तमा के कई बन्धु भी, विवाह में उपस्थित हुए।

अयाशा ने पहिले ही जगतसिंह से कह रखा था कि उसे विवाह के लिए निमन्त्रित किया जाये। इसलिए उसने उसके पास खबर भेजी। वह अपने भाई और कई आदमियों के साथ आयी। वह अन्तःपुर में ही रही। न मालूम वह मन ही मन कितनी दुखी हुई होगी। पर ऊपर ऊपर से वह बड़ी खुश थी। यह देखकर सब को सन्तोष हुआ।

विवाह के बाद जब अयाशा, विमला से विदा लेने गई, तो उसने पूछा—"नवाबजादी, क्या अपने विवाह के लिए मुझे न्योता दोगी?" वह अयाशा के प्रेम के बारे में नहीं जानती थी।

अयाशा ने उसको कोई उत्तर न दिया। तिलोत्तमा के पास आकर, उसके हाथ पकड़कर उसने कहा—"सखी, मैं जा रही हूँ। मैं तुम्हें तहे दिल से आशीर्वाद देती हूँ कि तुम सब सुखों का आजीवन आनन्द करो।"

"फिर तुम्हारे कब दर्शन होंगे?" तिलोत्तमाने पूछा।

"न मालूम हम फिर कब मिल पायेंगे? चाहे हम फिर मिलें या न मिलें पर तुम अयाशा को न भूलना।" अयाशा ने कहा।

"अयाशा को यदि भूल गई, तो क्या युवराज मुझे माफ़ करेंगे?" तिलोत्तमा ने हंसते हुए कहा।

"यह बात मुझे बिल्कुल नहीं जँची। राजकुमार के सामने कभी मेरी बात न उठाना। वचन दो कि नहीं उठाओगी।" अयाशा ने कहा। उसका ख्याल था कि जब कभी उसकी बात उठायी जायेगी, तब जगतसिंह को अवश्य दुख होगा।

तिलोत्तमा उसकी बात मान गई।

"परन्तु तुम कभी न भूलना। मैं अपनी याददाश्त के लिए जो चीजें तुम्हें दूँ, उन्हें तुम हमेशा अपने पास रखना।" कहकर अयाशा ने दासी को बुलाकर हाथी दान्त का सन्दूक मंगवाया। उसमें रत्न और आभरण भरे पड़े थे। अयाशा ने उन्हें स्वयं तिलोत्तमा को पहिनवाया। तिलोत्तमा भी अमीर घर की लड़की थी। पर उसने भी कभी उतने सुन्दर चमचमाते कीमती गहने नहीं देखे थे। इसलिए उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। सच कहा जाये, तो वे सब गहने अयाशा को उसके पिता ने दिये थे। परन्तु उनको अयाशा ने फिर से बनवाया था और तिलोत्तमा को देने के लिए उन्हें रख रखा था।

तिलोत्तमा को उनकी बार बार प्रशंसा करता देख अयाशा ने कहा—"क्यों इनकी इतनी प्रशंसा करते हो? जो तुम्हारे हृदय में आभूषण है उसकी तुलना में ये धूल के समान हैं।" कहते ही उसके आँसू निकल पड़े। उन्हें उसने पोंछ लिया। उसके दुःख का क्या कारण था, तिलोत्तमा न जान सकी।

अलंकरण के बाद अयाशा ने तिलोत्तमा के दोनों हाथ पकड़कर, उसके मुँह की ओर ध्यान से देखते हुए सोचा—"इस सुन्दरी का मुँह देखकर, कभी भी मेरे प्राणेश्वर को कष्ट न होगा।" फिर उसने तिलोत्तमा से कहा—"अब मैं जाती हूँ। तुम्हारे पति

से कहकर मैं उनका समय नहीं लेना चाहती। तुम हमेशा खुश रहो। मेरे दिये हुए गहने हमेशा तुम पहिनो। अपने हृदय के आभूषण को निर्मल रखो।"

तिलोत्तमा ने देखा कि यह कहते कहते उसका गला घुँट-सा गया था। उसकी आँखों में आँसू भर आये थे। "क्यों बहिन तुम दुखी हो?" यह कहते उसको भी रुलाई आ गई। इस बात से अयाशा की आँखों से आँसुओं की धारा बह पड़ी। वहाँ वह एक क्षण भी न रह सकी। जल्दी जल्दी जाकर अपनी पालकी में बैठ गई।

जब अयाशा अपने घर पहुँची, तो रात बहुत नहीं रह गई थी। अपनी पोषाक उतारकर, मामूली कपड़े पहिनकर, ठंडी हवा के लिए खिड़की के पास खड़ी हो गई। आकाश में अनन्त तारे छिटक रहे थे। नीचे किले की खाई में आकाश की परिछायी दिखाई दे रही थी।

अयाशा खिड़की में बैठकर क्या सोच रही थी, यह अनुमान करना कठिन है। उसने अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकाली। उसमें विष था। वह बड़ा तेज़ विष था।

"इस विष के रस को पीते ही, मेरी सारी तृष्णा एक क्षण में समाप्त हो जायेगी।" उसने सोचा। परन्तु तुरत उसने सोचा। "क्या इसी लिए ही भगवान ने मेरी सृष्टि की थी? यदि मैं यह थोड़ा-सा कष्ट ही न सह सकी, तो यह मेरा स्त्री जन्म कितना निरर्थक है? यही नहीं यदि यह जगतसिंह को मालूम हो गया, तो वह क्या सोचेगा?" यह सोच अयाशा ने वह अंगूठी खाई में फेंक दी।

[समाप्त]

अनिर्दिष्ट कार्य

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह फिर पेड़ के पास गया। पेड़ पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम्हारी लगन सचमुच असाधारण है। पर ऐसा लगता है, जैसे तुमने वह काम ले लिया है, जो तुम्हें नहीं करना चाहिए था। ऐसा करने से तुम भी विनीतमति की तरह सब कुछ कहीं खो न बैठो। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए विनीतमति की कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरू की।

कभी अहिच्छत्रपुर के उदयतुन्ग नामक राजा के पास कमलमित्र नाम का एक सेवक था। विनीतमति उस कमलमित्र का लड़का था।

एक दिन रात को, पूरी चान्दनी में जब वह छत पर लेटा हुआ था, तो उसे टहलने की मर्जी हुई। तुरत वह अपना धनुष लेकर वन में प्रवेश करके चलने लगा। उसको एक पेड़ के नीचे एक कन्या रोती हुई दिखाई दी।

"तुम कौन हो? क्यों यूँ रो रही हो?" विनीतमति ने पूछा।

"मैं गन्धमाली नाम के नागेन्द्र की लड़की हूँ। मेरा नाम विजयवती है। कालजिह्वा नाम के यक्ष ने मेरे पिता को युद्ध में हराकर दास बना लिया है। मुझसे यह नहीं देखा गया। मैंने गौरी की पूजा करके उसका साक्षात्कार किया। उस देवी ने मुझे एक दिव्य तलवार और एक सफ़ेद घोड़ा दिया। उन्हें उसने तुम्हें देने के लिए कहा। उनकी सहायता से कालजिह्वा को जीतकर, मेरे पिता को छुड़वाओगे और उसी तलवार से तुम शत्रुओं को जीतकर राजा बनोगे।" यह भी उस देवी ने बताया है। इस समय तुम्हें वन में प्रवेश करता देख, मैं तुम्हारा ध्यान आकर्षित करने के लिए रोयी। क्या तुम मेरी मदद कर सकोगे? विनीतमति इसके लिए मान गया। विजयवती चली गई और तुरत एक सफ़ेद घोड़ा और तलवार लेकर आयी। विनीतमति तलवार लेकर, घोड़े पर सवार हो विजयवती को भी घोड़े पर सवार करके, मानस सरोवर की ओर निकल पड़ा, जहाँ, यक्ष रहा करता था। चूँकि उस घोड़े में अद्भुत शक्तियाँ थीं, इसलिए उसने पलक मारते ही, उनको मानस सरोवर पहुँचा दिया।

यक्ष चक्रवाक का रूप धारण करके घूम फिर रहे थे। विजयवती का पिता गन्धमाली उनकी सेवा कर रहा था। विनीतमति ने

तलवार लेकर यक्षों पर हमला किया। तब कालजिह्वा अपना यक्ष रूप छोड़कर भयंकर आकृति करके, विनीतमति से भिड़ गया। परन्तु जब विनीतमति उसके केश पकड़कर उसको मारने को ही था उसने प्राणों की भिक्षा माँगी। गन्धमाली को छोड़ दिया गया। वह अपनी लड़की को, विनीतमति को अपने घर ले गया।

विनीतमति ने तलवार और घोड़े के साथ एक कन्या भी पायी। यह देख, उसका पिता कमलमित्र और राजा उदयतुन्ग बड़े खुश हुए।

उदयतुन्ग की उदयवती नाम की लड़की थी। वह सब विद्याओं में प्रवीण थी। राजा ने घोषित कर रखा था कि जो कोई ब्राह्मण या क्षत्रिय उसकी लड़की को वाद विवाद में हरा देगा। उसके साथ वह उसका विवाह कर देगा। विनीतमति के पिता ने उसे उकसाया कि वह उदयवती को वाद विवाद में हराकर उससे विवाह करे। उसको, स्त्री को वाद विवाद में हराना कुछ विचित्र-सा लगा।

तुरत कमलमित्र राजा के पास गया— "महाराज, मेरा लड़का राजकुमारी से विवाद

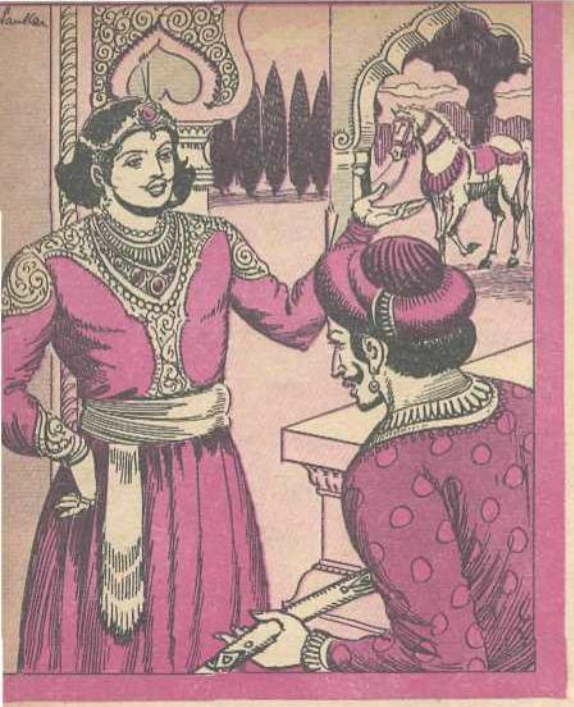

करना चाहता है। कल वाद विवाद की व्यवस्था करवाइये।" राजा इसके लिए मान गया। अगले दिन विद्वत्सभा बुलायी गई। विनीतमति ने, राजकुमारी ने जिस किसी सिद्धान्त को प्रस्तावित किया, उसे काट दिया। आखिर वह कुछ भी न कह सकी। उदयवती ने हारकर एक पति पा लिया। उदयतुन्ग ने विनीतमति का अपनी लड़की से वैभव के साथ विवाह किया।

कुछ समय बीता। उदयतुन्ग इतना वृद्ध हो गया कि वह राजकार्य का भार न उठा सका। चूँकि उसके लड़के न थे इसलिए अपने दामाद को राज्य देकर, मुक्ति के लिए गंगा के किनारे चला गया। विनीतमति राज्य करता, दोनों पत्नियों के साथ सुख से रह रहा था। इतने में इन्द्रकलश नामक राजकुमार उत्तर देश से विनीतमति को देखने के लिए आया। विनीतमति ने उसका यथोचित आदर सम्मान किया। उससे पूछा कि वह किस काम पर आया था।

"मैंने सुना है कि आप कल्पवृक्ष से हैं, जो कोई, जो कुछ माँगता है, आप उसे देते हैं। मैं जब अपने पिता को दिये हुए राज्य पर राज कर रहा था, तो मेरे छोटे भाई कनककलश ने बड़ी सेना के साथ मुझ पर हमला किया। मुझे मेरे राज्य से भगा दिया और वह स्वयं मेरे राज्य पर राज कर रहा है। यदि आपने अपनी तलबार और घोड़ा मुझे दिये, तो मैं उनकी मदद से अपने भाई को हराकर अपना राज्य ले लूँगा।" इन्द्रकलश ने कहा।

विनीतमति ने तुरत इन्द्रकलश को अपना घोड़ा और तलवार दे दिये। इन्द्रकलश ने उनकी मदद से कनककलश को जीता और अपना राज्य वापिस ले लिया। कनककलश भाई से पराजित किये जाने के बाद रोता

रोता अहिच्छत्रपुर आया। विनीतमति के महल के सामने चिता बनाकर उसमें जल कर मर जाने के लिए तैयार हो गया।

तब विनीतमति ने कनककलश के पास आकर कहा—"क्यों आत्महत्या कर रहे हो? तुम्हें राज्य ही न चाहिए? मेरा ले लो। मेरी कोई सन्तान नहीं है। मैं तुम्हें ही अपनी सन्तान मान लूँगा।" वह कनककलश को राजा बनाकर और अपनी दोनों पत्नियों को लेकर वनवास के लिए चला गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, मुझे कुछ सन्देह हैं। विनीतमति के व्यवहार का अर्थ क्या है? जब वह राजा था, तो उसने क्यों एक नितान्त अपरिचित को अपनी तलवार और घोड़े दे दिये? फिर उसने क्यों उस कनककलश के प्रति सहानुभूति दिखाई जो उनसे हार गया था? फिर उसको अपना राज्य दे देने में क्या अर्थ है? विनीतमति के महल के सामने कनककलश को चिता बनाकर जलकर मर जाने का क्या अर्थ था? यदि तुमने इन सन्देहों का जान बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा— "विनीतमति ने जो कुछ किया था, वह ठीक ही था। उसमें राज्य की आकाँक्षा न थी। जिस काम के लिए विजयवती ने उसको तलवार और घोड़े दिये थे उसको पूरा करने के लिए ही, उसने उनका उपयोग किया था। राजा के सन्तान न थी और राजकुमारी को वह आसानी से वाद विवाद में हरा सकता था। यह जानते हुए भी उसने पिता के कहने तक उससे वाद विवाद करने का निश्चय न किया। एक बार राजा होने के बाद अपने तलवार और घोड़े की मदद से उसने और राज्यों को जीतने का कोई यत्न न किया। इन सब से यह साफ हो जाता है कि विनीतमति में कहीं राज्य की आकाँक्षा न थी। ऐसी हालत में जब इन्द्रकलश ने तलवार और घोड़ा माँगा, तो उसने उनको दे दिया। कनककलश जो अपने भाई से हरा दिया गया था, यदि यह सोचता है कि उसकी हार का कारण विनीतमति था, तो इसमें क्या गलती है? विनीतमति यदि उसे हराकर राज्य ले लेता, तो वह दुखी न होता। कनककलश को यह गँवारा न था कि उसका कमजोर भाई दूसरे की मदद से उसे जीते। चूँकि वह उसके कारण आत्महत्या कर रहा था इसलिए विनीतमति ने अपना राज्य देकर उसकी राज्य की इच्छा को पूरा किया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

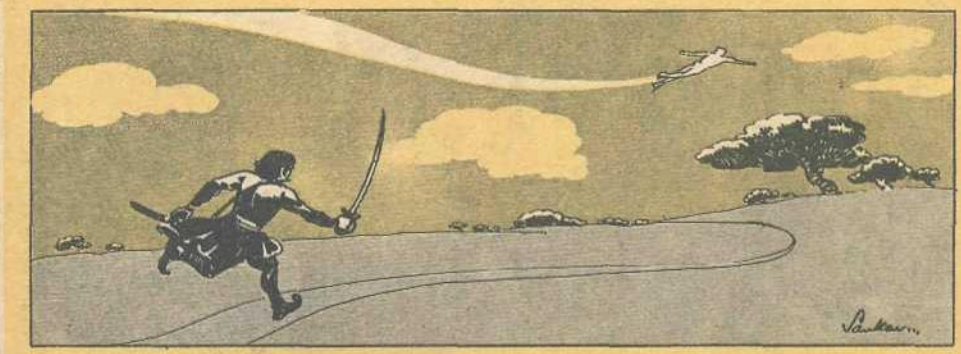

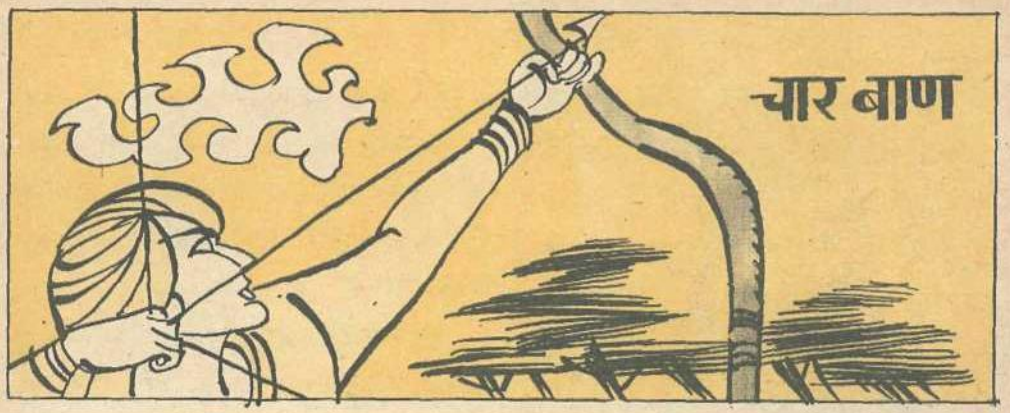

जगत्स नाम के राजा के धनंजय नाम का लड़का था। वह सब विद्याओं में उत्तीर्ण हुआ। पर बाण विद्या में उसने विशेष प्रवीणता प्राप्त की। जब वह सयाना हो गया, तो पिता उसको युवराज बनाने का प्रयत्न करने लगा। परन्तु धनंजय कुछ साल अपनी मर्ज़ी के मुताबिक काटना चाहता था और दुनिया को देखना भी चाहता था। परन्तु उसको जाने के लिए उसके माता-पिता अनुमति नहीं दे रहे थे। चूँकि वह उनका इकलौता था। धनंजय अपने माँ-बाप को बिना बताये ही घर छोड़कर, देश-विदेशों में भ्रमण करने निकल गया। राजा ने अपने लड़के की बहुत खोज करवायी, पर कहीं उसका पता नहीं लगा। राजा दुःखी रहने लगा। रानी अपनी लड़के के लिए रोती रोती अन्धी-सी हो गयी। सब का यही ख्याल था कि धनंजय मर गया था।

कुछ समय बीता। राजा, अपनी पत्नी से भी ऊब गया, जो पुत्र शोक में रोती रोती अपनी आँखें भी खो बैठी थीं और उसने एक और स्त्री से शादी कर ली। उसने अपनी बड़ी पत्नी के लिए, जंगल में एक महल बनवाया और उसके जीवन व्यापन के लिए, वहाँ आवश्यक व्यवस्था कर दी। कुछ दिनों बाद छोटी रानी के एक लड़का हुआ। उसको दुलारते पुचकारते राजा अपने बड़े लड़के और बड़ी रानी को भी भूल गया।

छोटी रानी का लड़का, जब पाँच वर्ष का था, धनंजय वापिस आया। देशों में

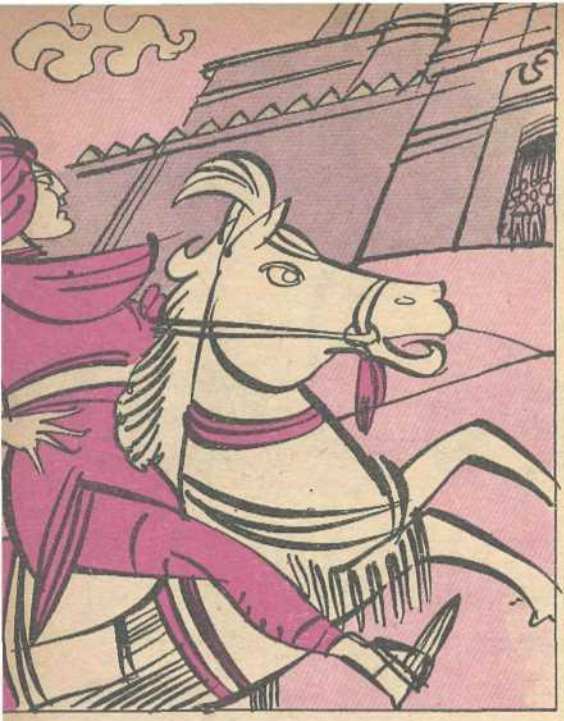

घूमते घूमते उसने कई विजय पायी, बहुत-सा धन और बहुत-से नौकर-चाकर लाया। अभी वह अपने पिता के किले के पास पहुँचा भी न था कि किसी ने राजा को बताया कि कोई महावीर बड़ी सेना के साथ किले में आ रहा था। ये खबर पहुँचानेवाले, हो सकता है, युवराज को जानते हों, पर चूँकि वह बिल्कुल बदला हुआ था, इसलिए वे उसे पहिचान न पाये।

इस भय से कि कोई उस पर आक्रमण करने आ रहा था राजा ने अपने मन्त्री को धनंजय के पास भेजा। मन्त्री ने भी धनंजय को न पहिचाना। "महाराज, यदि आप हमसे बिना युद्ध किये, अपने रास्ते चले गये, हमारे राजा मार्ग के खर्च के लिए दो हज़ार मुहरें आपको देंगे।" उसने कहा।

धनंजय ने हँसकर कहा—"मेरा रास्ता किले की ओर है। मैं इस देश का युवराज हूँ। क्या आपने मुझे पहिचाना नहीं है?"

मन्त्री बड़ा खुश हुआ। उससे, उसने इस बीच जो कुछ हुआ था, वह सब बताया। "अब तुम्हारी माँ अन्धी होकर, वन में छः कोस दूरी पर है। राजा के अब एक और युवराज बड़ा हो रहा है।" धनंजय यह सुनकर, किले में न गया, वह उस महल की ओर गया, जहाँ उसकी माता रह रही थी। लड़के का स्वर सुनते ही उसकी माँ की आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगी और उसकी खोई हुई दृष्टि फिर वापिस आ गयी।

इस बीच मन्त्री ने राजा के पास जाकर कहा कि धनंजय आ गया था, वह अन्तःपुर में न आकर उस वन की ओर चला गया था, जहाँ उसकी माता रह रही थी।

राजा ने अपने बड़े लड़के को अपने पास बुलवाया। धनंजय ने जवाब भिजवाया कि जब उसकी माँ जंगल में थी, तो वह राजमहल में न रह सकेगा। यही बात है तो तुम अपनी माता के साथ चले जाओ, राजा ने खबर भिजवायी। परन्तु धनंजय की माँ ने अपने पति के पास जाने से इनकार कर दिया।

धनंजय ने पिता को एक बार देखना चाहा। माँ से कहकर वह घोड़े पर सवार होकर निकल पड़ा। यह जान कि वह आ रहा था, नगर के लोग राज-पथ के दोनों ओर उसे देखने के लिए खड़े हो गये। उसके राजसभा में आते ही सदस्यों ने हर्षनाद किया। राजा ने अपने सिर का मुकुट लड़के के सिर पर रखकर कहा—"बेटा, आज से तुम ही राज्य करो।"

धनंजय ने कुछ देर राज्य के विषयों के बारे में अपने पिता से बातचीत की, फिर अपनी सौतेली माँ को देखने चला गया। राजा ने बताया था कि वह भी उसी महल में थी, जिसमें उसकी माता रहा करती थी। धनंजय जब उस महल की ओर जा रहा था, तो उसने राजा के

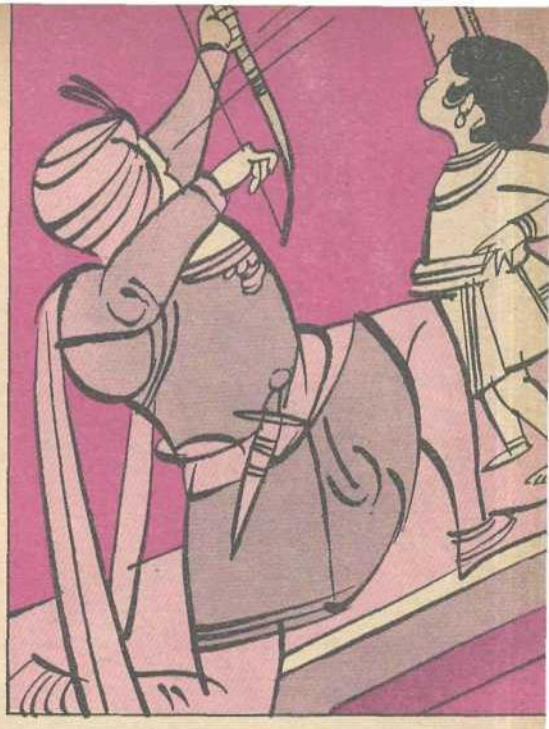

छोटे लड़के को एक धनुष और चार बाणों से खेलते देखा।

"भाई, देखो मैं तुम्हें दिखाता हूँ। इनसे कैसे खेला जाता है।" यह कहकर धनंजय ने चार बाणों को धनुष पर चढ़ाकर चारों दिशाओं में फेंक दिया।

"मेरे बाण मुझे दे दो..." कहता, लड़का रोने लगा। लड़के का रोना सुनकर राजा की छोटी पत्नी आयी। "क्यों बेटा, क्यों रो रहे हो? क्या बात है?"

"न जाने यह कौन हैं, आकर इन्होंने मेरे बाण फेंक दिये हैं।" राजा के छोटे

लड़के ने कहा। "अरे, अब तेरा रोना और मेरा रोना कौन सुननेवाला है?" छोटी रानी ने कहा।

धनंजय ने जिस ओर बाण फेंके थे, उस ओर नौकर उन्हें ढूँढ़ने गये। वे बहुत दूर गये, पर उनको वे बाण न मिले।

राजा को मालूम हुआ कि छोटी रानी महल में कुछ घबराई हुई थी। उसने आकर छोटी रानी से पूछा—"क्या मामला है यह सब?"

"उस लड़के ने इसके बाण फेंक दिये हैं।" छोटी रानी ने कहा।

"वह लड़का कोई पराया नहीं है। युवराज ही है। वे बाण भी उसी के हैं।" राजा ने कहा।

"हाँ, हाँ, आप सब आपस में नहीं मिलेंगे, तो क्या करेंगे?" छोटी रानी ने ताना मारा।

धनंजय ने अपने भाई को पुचकार कर कहा—"रोओ मत, मैं तुम्हारे लिए अच्छे बाण बनवा दूँगा।" वह काम करनेवालों से भाई के लिए बाण बनवाने के लिए कह, पिता से विदा लेकर अपनी माता के महल में आ गया।

वह धनंजय, जिसे मरा मान लिया गया था, वापिस आ गया था। इस कारण छोटी रानी का और उसके लड़के का दबदबा कम होने लगा। धनंजय को मरवाने के लिए उसने राजवैद्यों को बुलवाया। "यदि तुमने किसी दवा में विष मिलाकर धनंजय को दे दिया और उसको मार दिया तो तुमको अच्छे ईनाम दूँगी।" छोटी रानी ने कहा।

"जिसे कोई रोग वोग न हो, उसका ईलाज़ कौन कर सकता है? यदि आप यह दिखायें कि आप रोगी हैं, तो आपकी

चिकित्सा के लिए उनकी बलि लिये जाने के बारे में सोचा जा सकता है।" वैद्यों ने कहा। उनकी सलाह पर छोटी रानी यूँ कराहने चीखने लगी, जैसे बड़ा जबर्दस्त सिर दर्द हो, यह देखकर राजा ने वैद्यों को बुलवाया।

"महाराज, यह शिरोवायु से सम्बन्धित दर्द है। असली हीरे लाकर उनकी भस्म से औषधी तैयार की जा सकती है। ऐसे ही हीरे चाहिए जो रत्न द्वीप से लाये गये हों। रत्न द्वीप जाना खतरनाक है। वह ही जा सकता है, जो बहादुर हो। हीरे लाने के लिए शायद दो महीने लगें। तब तक और औषधियों से रानी का सिर दर्द कम किया जा सकता है।" वैद्यों ने कहा।

राजा ने यह धनंजय से कहकर, पूछा—"क्या तुम रत्न द्वीप जा सकोगे? या मैं जाऊँ?"

"आप बड़े हैं, आप क्यों तकलीफ़ उठाते हैं? मैं ही हो आऊँगा।" तुरत धनंजय रत्न द्वीप के लिए निकल पड़ा। रत्न द्वीप दक्षिणी किनारे पर कुछ दूरी पर था। वहाँ तोता राजा, राज्य कर रहा था। धनंजय जब तोता राजा के नगर में

गया, तो उसने एक ध्वजस्तम्भ पर एक बाण को पाया। वह वही बाण था, जिसने उसे अपने देश से छोड़ा था। धनंजय ने जब कहा—"आओ, बाण" उसके कहते ही वह बाण उसके हाथ में आ गया। यह देख वहाँ खड़े सैनिक धनंजय को राजा के पास ले गये। राजा ने उसका पता वगैरह पूछा।

"हमारा देश यहाँ से सौ कोस उत्तर की ओर है। मेरा नाम धनंजय है।" धनंजय ने कहा। बाण पर उसका नाम देखकर, सौ योजन दूर बाण फेंकनेवाले से अच्छा दामाद

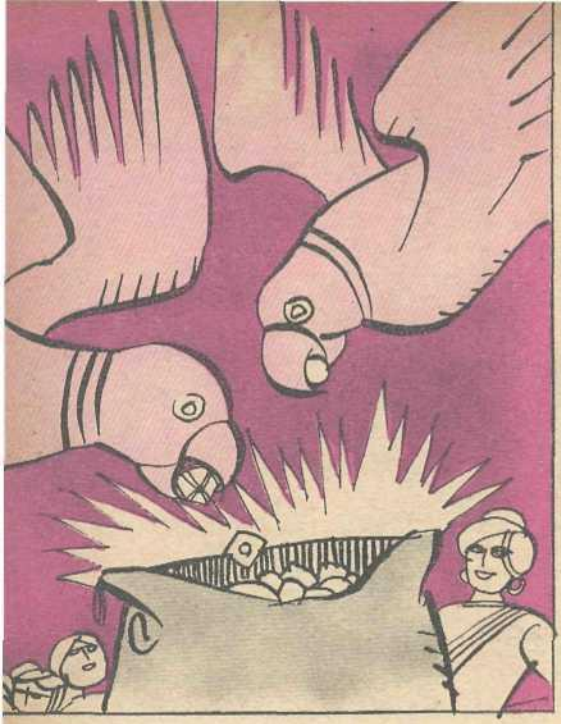

उसको न मिलेगा, उसने सोचा। उसने अपने लड़की से उसका विवाह कर दिया।

विवाह होते ही, धनंजय ने अपनी पत्नी को बताया कि वह किस काम पर आया था। "हीरे यहाँ के पहाड़ों में हैं। वहाँ मनुष्यों का जाना खतरे से भरा है। हम अपना पालतू तोता भेजकर आपको जितने हीरे चाहिए उतने मँगाये देते हैं।" उसकी पत्नी ने कहा।

तोता इतने हीरे लाया कि कई थैले भर गये। धनंजय उन्हें और अपनी पत्नी को लेकर अपने देश वापिस चला आया।

छोटी रानी का प्रयत्न असफल रहा। कुछ दिनों बाद फिर उसने बहाना किया कि उसे सिर दर्द हो रहा था। रोज़ वैद्यों को बुलाकर पूछा गया तो उसने कहा कि यह ऐसा शिरोवायु नहीं है, जो हीरों की भस्म से पूरी तरह ठीक हो जाये। इसके लिए तो राक्षसी रेशम ही ठीक रहेगी।" वैद्यों ने कहा।

राक्षसी रेशम पूर्व की ओर राक्षस देश में मिलता था। धनंजय वहाँ गया जहाँ राजधानी के ध्वजस्तम्भ में एक बाण घुसा हुआ था। राक्षस राजा ने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई कहे कि वह बाण उसका था, उसको उसके पास लाया जाये। ध्वजस्तम्भ के पास आकर, धनंजय के पुकारते ही, वह बाण उसके हाथ में आ गया। सैनिक उसको राजा के पास ले गये।

यह जानते ही कि धनंजय ने सौ योजन दूरी से बाण फेंका था राक्षस राजा ने अपनी लड़की का उसके साथ विवाह कर दिया। विवाह होते ही धनंजय ने अपनी पत्नी को बताया कि वह किस काम पर आया था।

"मैं राक्षसों को पाल रही हूँ। जीव द्वीप में असली राक्षस हैं। यदि मैं अपने पालतू राक्षस भेजूँ, तो जीव द्वीप से वे आवश्यक रेशम ले आयेंगे।" राजा की लड़की ने कहा।

इस प्रकार धनंजय ने दस थैले राक्षसी रेशम मँगवाया। धनंजय अपनी पत्नी और कुछ पालतू राक्षसों को साथ लेकर अपने देश वापिस चला आया। उन राक्षसों को देखते ही छोटी रानी का सिर दर्द जाता रहा। वैद्यों ने राक्षसी रेशम जलाकर उससे औषधी तैयार करके रानी को दिया।

कुछ दिन बीत गये। छोटी रानी ने फिर वैद्यों से साजिश करके कहा कि उसे फिर सिर दर्द हो रहा था।

राजा ने वैद्यों को बुलाकर पूछा कि अब क्या किया जाना चाहिए था।

"महाराज, राक्षसी रेशम से भी कीड़ा पूरी तरह नहीं मरा है। शेरनी के दूध से ही यह बीमारी जायेगी।" वैद्यों ने कहा।

शेर, उत्तर में शेर राजा के राज्य में थे। वहाँ जाकर ऐसी शेरनियों का दूध लाना था, जिन्होंने तभी तभी बच्चे दिये थे। इस काम पर धनंजय शेर राजधानी

की ओर निकल पड़ा। जब वह वहाँ पहुँचा तो वहाँ के ध्वजस्तम्भ पर भी उसी का बाण था। उसके बुलाते ही वह बाण उसके हाथ में आ गया।

शेर राजा ने उसको बुलवाया। उसका नाम, पता वगैरह पूछा, बाण पर उसका नाम देखकर उसने अपनी लड़की का उससे विवाह कर दिया। विवाह होते ही, धनंजय ने अपनी पत्नी को बताया कि वह किस काम पर आया था।

"मैं बहुत से शेरों को पाल रही हूँ। उनमें कई दूध दे रही हैं और कई सूखी

हैं। उनका दूध लेकर जाने से काम नहीं बनेगा। पचास शेरनियों को साथ ले जाया गया तो काम बन जायेगा।" शेर राजा की लड़की ने कहा।

धनंजय मान गया, वह अपनी पत्नी के साथ पचास शेरनियों को भी लेकर अपने देश आया। उन शेरनियों को देखकर तो लोग डरे ही, छोटी रानी भी डर के कारण मरते मरते बची।

वैद्यों ने उससे कहा कि शेरनी के दूध से ईलाज किया गया था, इसलिए बीमारी सुधर गई थी।

छोटी रानी ने वैद्यों को बुलाकर कहा—"यह धनंजय तो मौत के मुँह से भी बचकर चला आता है। अब क्या किया जाय? कोई ऐसा काम बताओ, जो इसके लिए असम्भव हो। यदि वह काम न कर सका, तो राजा भी उससे खिझ उठेगा।

"अच्छा, तो आप फिर बहाना कीजिये कि आपको सिर दर्द है। हम राजा से, जो कहना होगा, वह कह देंगे।" वैद्यों ने कहा। छोटी रानी फिर कराहने लगी।

यह देख, राजा ने वैद्यों को बुलवाया। "अरे, इतनी सब चिकित्सा के बाद भी तुम क्यों नहीं रानी का सिर दर्द दूर कर सके? तुम ठीक कर सकते हो कि नहीं?"

"राजा, बस, इसकी एक ही राम बाण औषधी है। शायद वह असम्भव हो, यह सोच हमने अभी तक उसके बारे में नहीं बताया था।"

पहिले बताओ कि चिकित्सा है क्या? वह सम्भव है कि नहीं, हम देख लेंगे।" राजा ने कहा।

"नये खोदे हुए तालाब में यदि रानी ने स्नान किया, तो शिर वायु की बीमारी

जाती रहेगी। परन्तु ज़रूरी है कि वह तालाब हमारे नगर के मैदान जितना बड़ा हो। उसके चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ होने चाहिए और उसमें मछलियाँ होनी चाहिए।" वैद्यों ने कहा।

"तालाब खुदवाने के लिए साल-भर लगेगा। उसके चारों ओर पेड़ बड़ा करने के लिए दस वर्ष कम से कम लगेंगे। यह चिकित्सा कैसे सम्भव है?" राजा ने कहा।

"हुजूर, हम यही सोच रहे हैं। यही नहीं हम जा दवा दे रहे हैं, वह एक महीने से अधिक काम नहीं करेगी।" वैद्यों ने कहा।

राजा चिन्तित हो उठा। वैद्यों को भेज दिया। धनंजय को बुलाकर, उसने बात बातयी। तुम ही इस बारे में कोई उपाय सोच सकते हो।" राजा ने कहा।

"मैं महीने में कोई उपाय ढूँढ़ निकालूँगा।" यह कहकर, धनंजय पश्चिम की ओर निकला। वह इसलिए निकला था कि कहीं वह ऐसा तालाब देख लेगा, जो तभी खोदा जा रहा हो। तीनों दिशाओं में सौ योजन के अन्दर उसे कोई वैसा तालाब नहीं दिखाई दिया था, इसलिए

वह अब चौथी दिशा की ओर निकला था। जाते जाते, उसको कोई ऐसी जगह तो नहीं दिखाई दी, जहाँ नया तालाब खोजा जा रहा हो पर हाथी राजा का नगर दिखाई दिया। वहाँ के ध्वजस्तम्भ में उसको चौथा बाण दिखाई दिया। बुलाते ही वह उसके हाथ में आ गया।

हाथी राजा ने उनका नाम वगैरह जानकर, उसके साथ अपनी लड़की का विवाह कर दिया। विवाह होते ही धनंजय ने बता दिया कि वह किस काम पर आया था।

"यह भी कितना बड़ा काम है ? मेरे पास पालतू हाथी हैं। मैं उनकी भाषा जानती हूँ। वे मेरी भाषा समझती हैं। जब मैं उनको समझा दूँगी कि उनको क्या करना है, वे जंगली हाथियों से मिलकर, वे अपने ही नगर में तालाब खोद देंगे और मय मछलियों के उसको पानी से भर देंगे। तालाब के किनारे बड़े-बड़े पेड़ लगवा देंगे। तुम्हारी सौतेली माँ, उसमें स्नान करके, अपनी चिकित्सा करवा सकती है।" उसने कहा।

जैसा उसने कहा था, वैसे ही हुआ। धनंजय जब अपनी पत्नी के साथ, अपने देश वापिस आया, तो नगर का मैदान, बड़ा तालाब बन गया था, उसमें मछलियाँ थीं। तालाब के चारों ओर बड़े-बड़े जंगली पेड़ थे।

राजा बड़ा खुश हुआ। उसने वैद्य से कहा—"रानी को स्नान करवाकर, उनकी चिकित्सा करो। इस बार यदि उनका, सिर दर्द रहा, तो तुम्हें ही दण्ड दूँगा।"

छोटी रानी स्नान करने जब आयी और जब उसने तालाब में एक पैर रखकर, दूसरा रखना चाहा, तो वह, तह में चली गयी। वह तालाब जिसे हाथियों ने खोदा था, किनारे पर ही दस फीट गहरा था। रानी उसमें गई, तो किसी को पता न लगा—फिर उसकी लाश ही पानी पर तैरती देखी गई।

राजा अपनी प्रिय रानी की मृत्यु पर दुःखी हो रहा था, तो उसको दासियों द्वारा उसके षड़यन्त्र के बारे में मालूम हुआ। राजा ने वैद्यों को देश निकाला दे दिया। अपनी बड़ी पत्नी को ले आया और दोनों लड़कों के साथ सुख से रहने लगा।

कोई मतलब न था। परन्तु राजा ने जानना चाहा कि वह क्यों हँसा था।

"और कुछ नहीं। पूर्व की ओर जंगल में आभूषणों से भरा एक कलश है, गीदड़ ईशारा कर रहा है कि मैं उसे ले आऊँ। मैं गीदड़ों की भाषा जो जानता हूँ।" तपस्वी ने कहा।

गीदड़ की बात ठीक थी कि नहीं, राजा ने जानना चाहा। जब वह तपस्वी को साथ लेकर गया और जहाँ उसने बताया, खोदा गया, तो कलश मिला। उसके सारे आभूषण मुनि ने राजा को दे दिये। राजा को मुनि पर विश्वास हो गया। ठिठाकराल ने राजा को, जो उसके पास प्रति दिन आ रहा था और दिशाओं में गाड़े हुए कलश भी इस प्रकार दिलवा दिये। राजा ही नहीं, राजमहल के सभी लोग इस चोर तपस्वी के दास-से हो गये।

एक दिन राजा मुनि को मन्दिर में साथ ले गया। वे मन्दिर के पास आ रहे थे कि एक कौव्वा चिल्लाया। "तपस्वी" ने राजा से कहा—"इस मन्दिर के सामने की गली में रत्नों से भरा कलश है, इसे ले लो...." यह यह कौव्वा बता रहा है।

राजा, उस कलश को पाकर बड़ा खुश हुआ। चोर तपस्वी का हाथ पकड़कर वह मन्दिर में चलाकर उसे ले गया। उस समय स्तम्भ में रहनेवाली कलावती ने मुनि वेष में अपने पति को पहिचानकर आँसू बहाये।

"स्वामी, यह क्या, मूर्ति रो रही है?" राजा ने उस नकली तपस्वी से पूछा।

ठिंठाकराल ने यूँ दिखाया, मानों बहुत चिन्तित हो, कहा—"ऐसी बात है, जो नहीं कही जा सकती। फिर भी घर में आपको बता दूँगा।" यह कहकर वह राजा के साथ राजधानी गया। उसने उससे कहा—"राजा, तुमने मन्दिर ऐसी जगह बनवाया है, जहाँ तुम्हें नहीं बनवाना चाहिए था और ऐसे मुहूर्त में बनवाया है, जब कि नहीं बनवाना चाहिए था। इसलिए यह मूर्ति तुम्हें देखकर आँसू बहा रही है। यदि तुम जीवित रहना चाहते हो, तो इस मन्दिर को तुरत भूमिसात् कर दो, किसी अच्छी जगह अच्छे मुहूर्त में एक और मन्दिर बनाओ। इससे तुम्हारा और तुम्हारी प्रजा का कल्याण होगा।"

राजा घबरा गया। उसने अगले दिन ही मन्दिर तुड़वा दिया और एक जगह उसे बनवा दिया। काम खतम होते ही, ठिंठाकराल सन्यासी वेष छोड़कर उज्जयिनी चला गया। शाप विमुक्त होकर कलावती अपने पति को देखकर इन्द्र को देखने गई। उसे देखकर इन्द्र चकित हो उठा। उसे शाप विमुक्त करने के लिए ठिंठाकराल ने जो उपाय बरता था, उसके बारे में सुनकर इन्द्र ज़ोर से हँसा। उसने कलावती द्वारा उसको स्वर्ग में बुलवाया। उसको उसने कलावती विवाह में दे दी।

हुआ था, उसे कह सुनाया। इन्द्र ने कलावती को बुलाकर कहा—"तुम एक मनुष्य को क्योंकि स्वर्ग में लायी हो, इसलिए तुम्हें सज़ा दी जाती है कि नागपुर में नरसिंह जो मन्दिर बनवा रहे हैं, उसके मन्दिर के ध्वजस्तम्भ में रहो।"

कलावती और उसकी माँ अलम्बशा ने इन्द्र के पाँव पड़कर, उनसे क्षमा माँगी उससे कृपा करने के लिए कहा। तब इन्द्र ने कलावती से कहा—"जब वह मन्दिर मिट्टी में मिल जायेगा, तब तुम्हारी शाप विमुक्ति होगी।"

वह अपने पति के पास गई। उससे उसने इन्द्र ने जो शाप दिया था, उसके बारे में कहा, उसने अपने दिव्य आभूषण उतारकर, अपने पति को दे दिये। शाप भुगतने के लिए वह नागपुर गई और वहाँ मन्दिर के मूलस्तम्भ के ऊपर के लकड़ी के स्तम्भ में प्रविष्ट हो गई।

ठिंठाकराल पत्नी के बियोग में बड़ा दुखी हुआ। उसकी लापरवाही से ही उसके मुख से बात निकल गई थी और उसके कारण ही कलावती को शाप भुगतना पड़ रहा था, यह सोच उसने अपने को

खूब कोसा। फिर उसने सोचा कि दुखी होने से फ़ायदा न था। जैसे भी हो उसने कलावती को शीघ्र से शीघ्र शाप विमुक्त करने की ठानी।

उसने मुनि वेष धारण किया। नागपुर गया। उसने नगर के चारों दिशाओं के वनों में कलावती के आभूषणों से चार कलश भरकर निशान लगाकर गाड़ दिये। रत्नों से भरे पाँचवें कलश को उसने आधी रात के समय मन्दिर के सामने गाड़ दिया। इसके बाद नदी के तट पर उसने एक छोटी-सी पर्णशाला बनाई और उसमें झूटमूट की तपस्या करने लगा। नगरवासी उस झूटमूट के तपस्वी को देखकर महा तपस्वी समझने लगे। उसकी खबर राजा तक पहुँची। राजा ने उसको बुलवाया। परन्तु ठिंठाकराल नहीं गया। तब राजा स्वयं उसकी पर्णशाला के पास आया। शाम तक दोनों में बातचीत होती रही। राजा जब घर के लिए निकल रहा था, तो गीदड़ चिल्लाया।

यह सुनते ही कपटी तपस्वी हँसा। जब राजा ने उससे हँसने का कारण पूछा, तो उसने कहा कि उस बात से उसका

उन्होंने जो कपड़े किनारे पर रख रखे हैं, उन्हें उठा ले आओ। उनमें कलावती नाम की एक अप्सरा है। जब तक वह तुमसे शादी करने के लिए न मान जाये, तुम उनके कपड़े वापिस न देना।"

ठिंठाकराल ने वैसा ही किया, जब उसने कहा कि जब तक कलावती उसकी न हो गई, तब तक वह उनके कपड़े न देगा। बाकी अप्सरायें इसके लिए मान गईं— चूँकि कलावती को इन्द्र ने पहिले ही शाप दे रखा था उसके यह कहने पर कि स्वर्ग को देखकर ही आनन्दित हुआ जा सकता था, परन्तु भूलोक में जो सुख थे, वे वहाँ न थे इन्द्र ने उसे शाप दिया—"मनुष्य से विवाह करके, तुम भूलोक के सुखों का अनुभव करो।" यह शाप अब पूरा हुआ। कलावती ठिंठाकराल की पत्नी बनी। वह दिन-भर देवलोक में रहती और रात होते ही पति के पास चली आती।

एक दिन कलावती ने अपने पति से कहा—"कल रम्भा, इन्द्र के सामने एक नया नृत्य कर रही है। जब तक वह खतम नहीं हो जाता, हम सबको वहीं

रहना होगा। इसलिए मैं काफ़ी देरी से आऊँगी।"

"वह नृत्य मैं भी देखना चाहता हूँ। मुझे चुपचाप ले जाओ।" ठिंठाकराल ने कहा।

"अरे बाप रे बाप, यदि इन्द्र को मालूम हो गया, तो आफ़त आ जायेगी।" कलावती ने कहा। पर उसने उसको जैसे तैसे मना लिया। जब सवेरे होते ही कलावती स्वर्ग की ओर जाने लगी, तो वह पति को अपने कान में लगाये हुए फूल में छुपाकर, साथ ले गई। ठिंठाकराल ने अपनी पत्नी की सहायता से, इन्द्र महल के सामने के ऐरावत और नन्दनवन को देखा। उसने इन्द्र को देवताओं के दरबार में देखा, अप्सराओं को गाता और रम्भा को नाचता देखा। नारद आदि का वाद्य संगीत सुना।

आखिर उसने एक बकरी को नाचते देखा। उस बकरी को रोज वह उज्जयिनी में देखा करता था। उसे न समझ में आया कि वह वहाँ क्यों थी। उसने सोचा कि उसमें अवश्य कोई माया की बात थी। सच कहा जाये तो, वह बकरी मामूली घुमक्कड़ देवता था।

इन्द्र की सभा समाप्त होते ही कलावती अपने पति को वापिस भूलोक में ले गई। अगले दिन वह बकरी, उसको उज्जयिनी में दिखाई दी। उसने उसे रोककर कहा—"अरे घुमक्कड़, कल तुमने जो नृत्य इन्द्र के सामने किया था, मेरे सामने भी करो। नहीं, तो तुम्हें माफ़ नहीं करूँगा।"

"इसको मेरी बात कैसे मालूम हुई? यह तो मामूली आदमी है?" बकरी ने सोचा। जब वह उसके कहने पर न नाची, तो ठिंठाकराल ने उसके मुँह पर ज़ोर से मारा। उसके मुँह से खून बहने लगा। वह भागी-भागी इन्द्र के पास गई और जो कुछ

ठिंठाकराल

उज्जयिनी नगर में ठिंठाकराल नाम का एक विचित्र व्यक्ति रहा करता था। वह दिन-भर जुआ खिलवाता। जो कोई जीतता, उससे सौ कौड़ियाँ लिया करता, शाम के समय, वह उस पैसे से बाज़ार में कुछ आटा खरीदता और किसी ठीकरे में थोड़ा पानी लाकर, आटे को गोंदकर, रोटियाँ बना लिया करता। फिर वह उन रोटियों को श्मशान ले जाता—चिता की आग में उनको सेंकता। उन्हें महाकाल के मन्दिर में ले जाता, वहाँ दीपाराधना के घी को रोटियों पर चुपड़ता। उन्हें खाकर, मन्दिर में सो जाता। एक दिन रात को जब ठिंठाकराल, मन्दिर में लेटा हुआ था, तो उसको मन्दिर की दीवार पर मातृक चित्र, यक्ष की मूर्तियाँ हिलती हुई दिखाई दीं। तुरत उसे ख्याल आया कि मन्दिर के देवताओं को यदि जुये में उतारा गया, तो लाभ होगा।

यह ख्याल आते ही उसने कहा—"देवताओ, मुझसे जुआ खेलो। जब जो जीते, तभी नकद दे देना होगा।"

देवताओं ने कोई जवाब न दिया। जुआखारों में एक नियम है, जब खेलनेवाला बाज़ी लगाकर, पाँसा फेंकनेवाला हो, अगर कोई कहे कि वह नहीं खेलेगा, तो यह नहीं माना जाता। उसे खेल में शामिल ही माना जाता है। ठिंठाकराल ने बाज़ी लगायी और पाँसा फेंका। देवताओं ने उसे न रोका। ठिंठाकराल बहुत देर तक जुआ खेलता रहा—उसने देवताओं से बहुत-सा सोना जीता।

रामदेव साधक

आखिर उसने कहा—"मैंने जो कुछ सोना जीता है, वह मुझे दे दो।" इसका जवाब भी देवताओं ने नहीं दिया। जुये में हारकर, यदि कोई पैसा न दे और चुप रहे, तो उनको आरों से काटने का रिवाज़ है। इसलिए ठिंठाकराल देवताओं को काटने के लिए एक आरा ले आया। उसे देखकर, देवता डर गये और जो कुछ धन उन्होंने जुये में खोया था, उन्होंने दे दिया।

इसके बाद, ठिंठाकराल हर रोज रात को, देवताओं से जुआ खोलकर, बहुत-सा सोना जीतने लगा। यह देख चामुन्डी देवी ने उनसे कहा—"जब वह बाज़ी लगाकर, जुये के लिए बुलाये, तब तुम कहना कि हम जुये में नहीं है, इसका मतलब यह होगा कि तुम खेल में नहीं हो।"

ठिंठाकराल जब जुये के लिए बुलाता, तो दीवार के देवताओं कहते—"हम नहीं खेल रहे हैं।" इस तरह उसकी चाल न चल सकी। वह सीधे महाकाल के पास गया। उसने उस देवता को जुये के लिए बुलाया।

"मैं नहीं खेलूँगा...." महाकाल ने कहा। तुरत ठिंठाकराल ने देवता के दोनों पैर पकड़ लिये। "स्वामी, मेरे दुर्भाग्य से क्या तुम भी लोभी हो गये हो? तुम तीन लोकों का बोझ उठा सकते हो। पर मुझ दरिद्र का भार नहीं उठा सकते? तुम्हें मुझ पर कृपा करनी ही होगी।"

"अरे डरो मत! तुम्हें कोई कमी न होगी। अब तुम यहीं रह जाओ।" महाकाल ने कहा। ठिंठाकराल वहीं रहकर, समय बिताने लगा।

एक दिन रात को भैरव ने उससे कहा—"अरे, इस समय कुछ अप्सरायें महाकाली तीर्थ में स्नान कर रही हैं।

एक पुराना कपड़ा ले लिया। उसने अपने चीथड़े एक तरफ़ रख दिये। वे कपड़े पहिनकर, सिर पर पगड़ी बाँधकर, दीवार के सहारे जा खड़ा हुआ।

उसी समय, घर के सामने एक ताँगा आकर रुका। उनमें से जगन्नाथ का दामाद उतरा। भिखारी तुरत गया, वह उसका सन्दूक पकड़कर, दामाद के पीछे पीछे गया।

गाड़ी की आवाज सुनकर, जगन्नाथ बाहर आया। दामाद की अगवानी की। उसके पीछे एक आदमी को आता देख, उसने सोचा कि दामाद के साथ कोई नौकर आ रहा था।

दामाद ने उसको देखकर सोचा कि वह कोई ससुराल का आदमी था।

यह सोचकर कि वह दामाद का नौकर था, जगन्नाथ और उसकी पत्नी ने, उसकी बड़ी आवभगत की। अगर उसे कुछ काम वाम करवाना होता, तो बड़ी मीठी तरह मना मनाकर करवाते।

जब सब अन्दर भोजन कर रहे थे, तो जगन्नाथ ने भिखारी को बाहर बरान्डे में बिठाकर खाना खिलवाया। उसको कोई

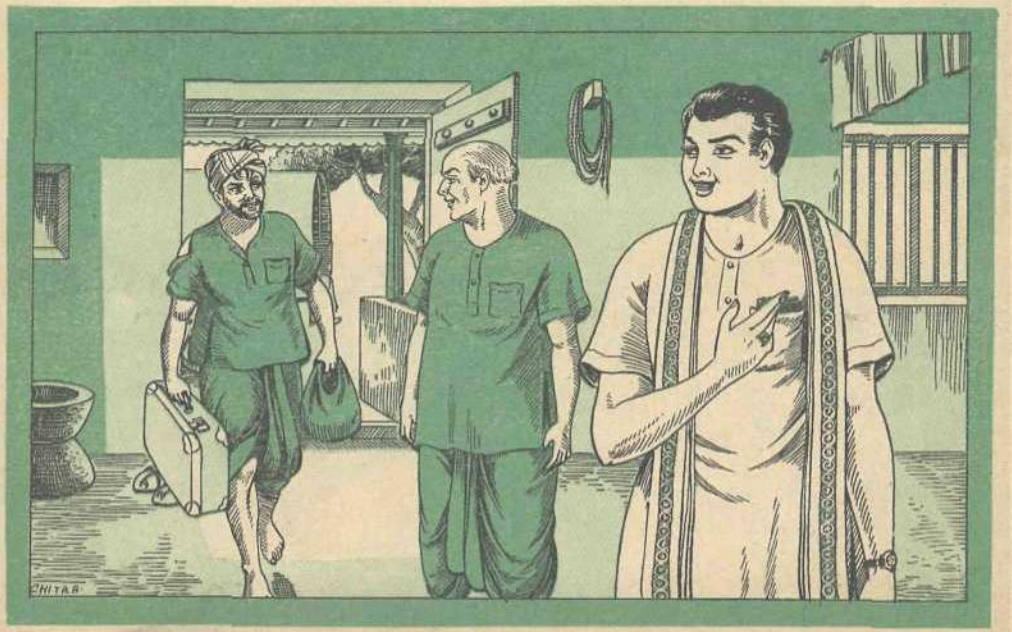

कमी न होने दी। उस भिखारी को उस दिन, अच्छी दावत खाने को मिली।

भोजन के बाद, जगन्नाथ ने अपने दामाद को नये कपड़े दिये। जगन्नाथ की पत्नी ने एक पोटली में मिठाई बान्धकर दी—"इसे ले जाकर, अपने बाल-बच्चों को देना।"

जगन्नाथ का दामाद, एक दिन रहकर अपने पत्नी और लड़के साथ निकलने लगा। वह भिखारी ही गाड़ी पटाकर लाया। उसने सारा समान गाड़ी पर रख दिया। जगन्नाथ के दामाद ने सब के बाद, गाड़ी में चढ़ते हुए यह सोच कि वह भिखारी उस घर का नौकर था, उसके हाथ में एक रुपया रखा। कहा "रखो"।

गाड़ी के चलने के बाद, जगन्नाथ की लड़की ने अपने पति से कहा—"आप उसे पैसे देकर भेज रहे हैं, क्या वह आपके साथ नहीं आया था?"

"नहीं तो, मैंने सोचा कि वह तुम्हारा नौकर था।" दामाद ने कहा।

"हमारे लोग सोच रहे थे कि आपका नौकर है वह।" पत्नी ने कहा। दोनों हँस पड़े।

"क्यों जी! यह नौकर उनके साथ न जाकर कहीं और जा रहे हैं। क्या वह दामाद का नौकर नहीं था?" जगन्नाथ की पत्नी ने उससे कहा।

"तो यह कौन है?" जगन्नाथ ने कहा। वह नौकर नहीं था, जिसे उसने रखा था। वह दामाद का नौकर भी न था। शायद कोई ऐरा गैरा था। ऐसे की आवभगत की थी, यह सोचकर जगन्नाथ और उसकी पत्नी उबलते उबलते अन्दर चले गये।

नाम नहीं लेता है। यदि वह यूँ आलसी बन गया, तो उसे कब तक खिलाओगे?"

पन्नालाल ने उनसे कहा जैसा कि वे कह रहे थे, वैसा कुछ नहीं हुआ है। उसने आकर कहा कि लड़की का ब्याह है, मैंने कहा, अच्छा काम है, इसलिए मैंने साड़ी दे दी, "पर अब आप क्या चाहते हैं कि मैं करूँ?"

"आप हमारे साथ आइये। चूँकि संगमलाल ने आपसे झूट बोला है, इसलिए जो कुछ आपने दिया है, उसे ले लीजिये।" पटवारी ने कहा।

"जो दिया है, उसे वापिस लेना अच्छा नहीं है। परन्तु मैं आपके साथ आऊँगा और मालूम करूँगा कि उसने क्यों झूट बोला था। चलिये।" कहता वह निकल पड़ा। पन्नालाल को देखकर संगमलाल घबरा गया और उसने सिर नीचा करके, सच सच कबूल कर लिया।

पन्नालाल ने संगमलाल के पास जो चावल बच गये थे, मुखिया की मदद से उसे वहाँ के लोगों में एक एक को एक एक सेर के हिसाब से बाँट दिये।

संगमलाल की पत्नी शर्मिन्दा हो पछताती पन्नालाल के सामने उसकी साड़ी लेकर आयी। "कोई बात नहीं। यह साड़ी तुम ही रख लो। तेरे पति ने गलती की है। उसके लिए तुम क्या कर सकती हो? फिर कभी ऐसा न हो।" पन्नालाल ने कहा। फिर भी उसने साड़ी के टुकड़े करके, जाकेट के लिए कपड़ा बनाकर औरों में बाँट दिया।

उसके बाद, उस ईलाके में यह माना जाने लगा कि पन्नालाल को धोखा देकर, किसी का भला नहीं होगा।

स्वयं सेवक

एक गाँव में जगन्नाथ नाम का एक गृहस्थी रहा करता था, उसने अपनी लड़की का अच्छे हैसियतमन्द घर में विवाह किया।

जगन्नाथ की लड़की, पहिले प्रसव के लिए माईके आयी। उसने एक लड़के को जन्म दिया। कुछ दिनों बाद, उसके दामाद ने उसको लिखा कि वह फलाने तारीख को आकर, पत्नी और लड़के को ले जायेगा।

जगन्नाथ कोई अमीर न था। जो कुछ आता, उसीसे गुज़ारा कर रहा था, उसके घर में कोई नौकर भी न था। यही नहीं वह कुछ कुछ कँजूस भी था, जगन्नाथ ने सोचा कि दामाद हैसियतमन्द था, इसलिए कम से कम उसके लिए एक दिन तक तो नौकर रखा जाये।

दामाद को जिस दिन आना था, उस दिन सवेरे से पकवान बनाये जाने लगे थे।

जगन्नाथ दिन भर नौकर के लिए खोजता रहा, पर कहीं कोई न मिला। उसने पत्नी से कहा कि यह बड़ी लज्जा की बात होगी कि दामाद किसी को बुलायें और उनका जवाब देने के लिए कोई नौकर भी न हो।

पति पत्नी, जब यूँ आपस में बातें कर रहे थे, तो एक भिखारी ने, जो पकवानों की सुगन्ध सूँघकर वहाँ आया था उनकी सब बातें सुन लीं। वह भोजन के साथ ये पकवान भी खाना चाहता था।

सामने के वरान्डे में किसी को न पा, वह कुँये की ओर गया। वहाँ से उसने

सत्यदेव

संगमलाल की पत्नी को चावल के बोरे की अपेक्षा नई साड़ी ज्यादह अच्छी लगी। अगले दिन ही वह उसे पहिनकर गाँव में जान पहिचानवालों के घर गई। उसने उनसे कहा—"कल पन्नालाल हमारे यहाँ आये थे। पानी पीकर उन्होंने कुछ देर आराम किया। शायद उन्होंने देख लिया होगा कि मेरी साड़ी चीथड़े हो रही थी, जो साड़ी वे अपनी पत्नी के लिए खरीदकर ले जा रहे थे, उसे मुझे दे दिया और घर जाकर उन्होंने एक बोरा चावल भी भेज दिया।" सुननेवाले जान गये कि यह सच न था, कई ने संगमलाल के घर गाड़ी और चावल का बोरा आते देखा था। पर पन्नालाल को आते किसी ने न देखा था।

संगमलाल ने पटवारी के घर कह दिया था कि वह कल उसके यहाँ काम करेगा। उससे मज़दूरी की पेशगी भी ले ली थी। परन्तु वह काम पर न गया। क्यों नहीं आया था, यह जानने के लिए पटवारी संगमलाल की बस्ती में आया। ग्रामवसियों ने पटवारी से पूछा—"कैसे आना हुआ?"

"संगमलाल कह गया था कि काम पर आयेगा। पर आया नहीं।" पटवारी ने कहा।

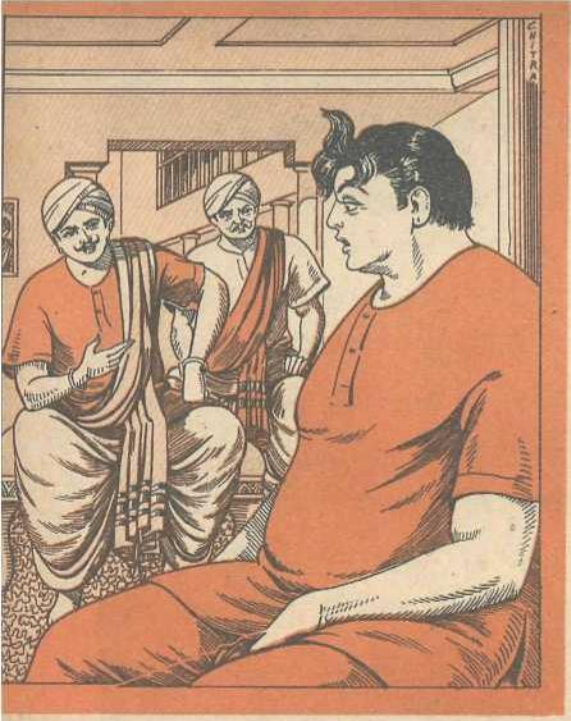

"वह भला क्यों आयेगा? अब उसे बोरा भर चावल जो मिल गया है।" ग्रामवासियों ने पटवारी को सब कुछ बताकर कहा। पटवारी ने संगमलाल के घर जाकर उससे पूछा कि वह क्यों नहीं आया था।

"मैं अभी नहीं आ सकता। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। आप से जो मज़दूरी ली है, उसके लिए मैं कभी और आकर काम कर दूँगा।" संगमलाल ने पटवारी से कहा।

"अरे पन्नालाल ने तुझे बोरा भर चावल और तेरी पत्नी को एक साड़ी दी है न? इसी वजह से शायद तेरी तबीयत ठीक नहीं है। क्यों?" पटवारी ने पूछा।

"हाँ, सच है कि उनसे एक बोरा चावल और साड़ी मिले हैं। पर सचमुच मेरी तबीयत ठीक नहीं है। यदि आपको विश्वास न हो, तो आप अपनी मजूरी वापिस ले लीजिये।" संगमलाल ने पैसा देते हुए कहा।

"नहीं, जब पन्नालाल तुम्हें इतना दे सकते हैं, क्या मैं तुम्हें एक दिन की कूली भी नहीं दे सकता?" कहकर पटवारी वहाँ से चला गया।

उसे रास्ते में गाँव के एक मुखिया ने मिलकर कहा—"संगमलाल के बारे में कोई धोखा मालूम होता है। इसका पता लगाना होगा।"

दोनों पन्नालाल के गाँव आये। पन्नालाल से मिलकर उन्होंने कहा—"आप दानधर्म करें सो करें, परन्तु पात्र और अपात्र के बारे में सोचकर ही कीजिये। जो योग्य है, उसे ही दान देना ठीक है। चूँकि एक दिन उसने कुछ पानी पिलाया था, आपने उसे एक बोरा चावल और नई साड़ी दे दी और वह उसे पाकर काम करने का

अपात्र को दान

पन्नालाल, चाहे कोई भी हो, यदि वह किसी कष्ट में हो, तो बिना प्रतिफल की अपेक्षा किये मदद करता था। उसे परोपकार में ही आनन्द आता था। यह बात आस पास के गाँव में सभी जानते थे।

उन गाँवों में नाहरपुर भी एक गाँव था। वहाँ रहनेवाले सभी गरीब थे, कूली मज़दूरी करके ज़िन्दगी बसर करते थे। उनमें एक संगमलाल भी था। उसने पन्नालाल के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था। पन्नालाल से मदद लेकर बिना कुछ काम वाम किये वह कुछ दिन आराम से घर में काटना चाहता था।

उन दिनों धान खलिहान से घर लाया जा रहा था। संगमलाल ने एक दिन पन्नालाल के घर जाकर कहा--"मैं बड़ा गरीब हूँ। मुझे अपनी लड़की की शादी करनी है। सम्बन्ध तो मिल गया है, पर पाँच दस को बुलाकर खाना तो खिलाना ही होगा। मैं चावल तक नहीं खरीद सकता। अगर आपने चावल दे दिये, तो समझ लूँगा कि आपने ही शादी करवा दी है।"

"तुम ठीक समय पर आये हो। मेरे पास पैसा तो नहीं है, पर धान ज़रूर है। बताओ कितना चाहिए। तुम्हारी लड़की की शादी में जितना धान चाहिए मैं उतना दे दूँगा।" पन्नालाल ने कहा।

"सारे गाँव को बुलाना होगा। कम से कम तीन सौ आदमियों को खाना देना होगा। एक बोरा काफी रहेगा।" संगमलाल ने कहा।

पन्नालाल ने उसे एक धान का बोरा दिया। उसने वह नई साड़ी भी दे दी, जो उसने मीनाक्षी के लिए खरीदी थी। और कहा—"इसे, दुल्हिन को मेरी तरफ़ से दे देना।"

संगमलाल बोरा, पन्नालाल की गाड़ी में ही डालकर अपने गाँव ले गया। गाड़ी को फिर पन्नालाल के यहाँ पहुँचा दिया।

संगमलाल ने अपनी चाल के बारे में अपनी पत्नी से न कहा था। उसने धान का बोरा और साड़ी देखकर पूछा—"क्या हैं ये? कहाँ से लाये हो?"

"एक है परोपकारी महानुभाव पन्नालाल। मैं रोया धोया कि मेरी एक लड़की है, उसकी शादी करनी है। और उस पगले ने मेरी बात पर विश्वास कर लिया। अरे अब पाँच दस दिन मज़े में गुज़ारा चलेगा।" संगमलाल ने कहा। वह अपनी चालाकी पर स्वयं फूल रहा था।

"चाल तो अच्छी है। अगर वह जान गया कि हमारी लड़की ही नहीं है, तो बड़ा होहल्ला होगा।" पत्नी ने कहा।

"वह होहल्ला करनेवाला नहीं है।" संगमलाल ने कहा।

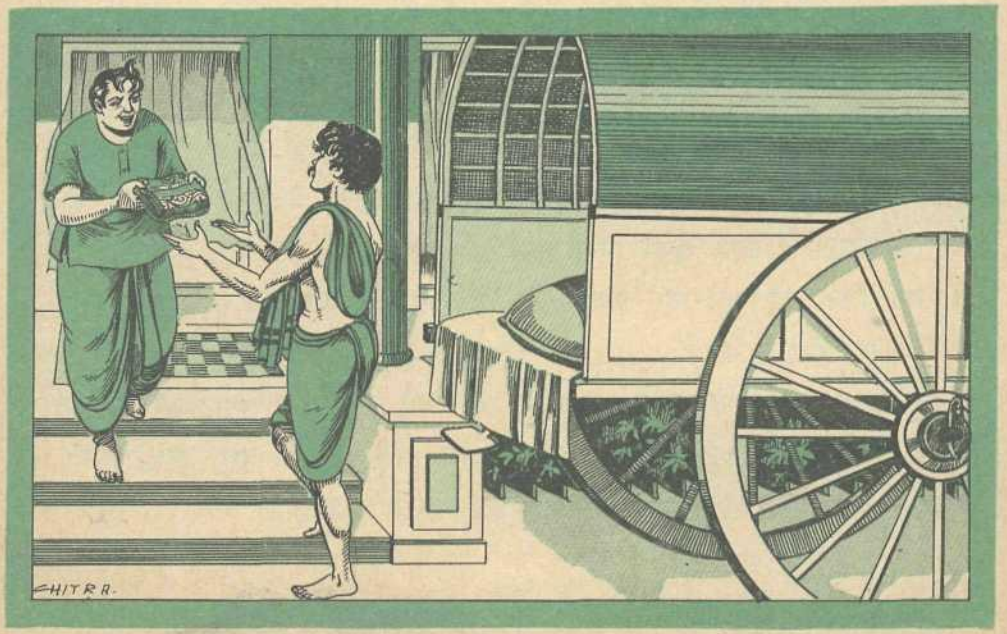

युद्धकाण्ड

विभीषण तुरत जाकर पुष्पक विमान ले आया। वह बहुत बड़ा था। उसमें कई भाग सोने के बने थे। आसन मोतियों का था। उस पर सोने की घंटियाँ लगी थीं। उसको राम के सामने लाकर रखकर विभीषण ने हाथ जोड़कर पूछा—"और क्या आज्ञा है?"

"विभीषण, वानरों ने बहुत बड़ा काम किया है। तुम उनको उपहार आदि देकर सन्तुष्ट करो। इसके लिए तुम्हें बड़ी कीर्ति मिलेगी।" कहकर राम सीता लक्ष्मण को लेकर, विमान में सवार हो गये।

उन्होंने सुग्रीव आदि से विदा लेकर, अयोध्या जाने की उनसे सस्नेह अनुमति माँगी।

उन्होंने कहा—"हमें भी साथ ले जाइये। हम भी आपका पट्टाभिषेक देखकर आनन्दित होंगे।"

"तो आप सब भी आइये।" राम ने सबको पुष्पक विमान में निमन्त्रित किया।

सबको लेकर, पुष्पक आकाश में उड़ा। इतने लोग विमान में थे पर वह इतना बड़ा था कि कहीं जगह की तंगी न थी।

विमान में जब वे जा रहे थे, राम ने सीता को वे युद्ध स्थल दिखाये, जहाँ राक्षस वीर मारे गये थे। पुल वगैरह दिखाये। उन्होंने वह जगह भी दिखाई, जहाँ वे विभीषण से मिले थे।

जब वे किष्किन्धा के पास आये, तो सीता ने इच्छा प्रकट की कि तारा आदि सुग्रीव की पत्नियाँ और वानर वीरों की पत्नियाँ भी साथ आयें। राम मान गये।

उन्होंने पुष्पक को नीचे उतारा और सीता की इच्छा के बारे में सुग्रीव को बताया। सुग्रीव ने अपने अन्तःपुर में जाकर, तारा और वानर वीरों की पत्नियों को आने के लिए कहा। तारा ने सब वानर स्त्रियों को यात्रा के लिए तैयार किया। वे सब सजधज कर सीता को देखने आयीं।

वानर स्त्रियों को सवार करके विमान फिर चल पड़ा। राम ने सीता को ऋष्यमूकपर्वत दिखाया, जहाँ वे सुग्रीव से पहिले पहल मिले थे। फिर उन्होंने वह जगह दिखाई, जहाँ उनको शबरी दिखाई दी थी। जहाँ जटायू रावण से लड़ा था। वह जनस्थान भी दिखाया, जहाँ वे आश्रम बनाकर रहे थे।

विमान अयोध्या के पास पहुँचने को आया। वानर, राक्षस आदि खड़े होकर, अयोध्या नगर को देखने लगे।

परन्तु राम सीधे अयोध्या नहीं गये। वे भारद्वाज आश्रम गये। भारद्वाज से उन्होंने भरत और अपनी माताओं के कुशलक्षेम के बारे में पूछकर मालूम किया।

वे चैत्र शुद्ध पंचमी के दिन अयोध्या से वनवास के लिए निकले थे। उस दिन चैत्र शुद्ध चतुर्थी थी। चौदह वर्ष पूरे होते

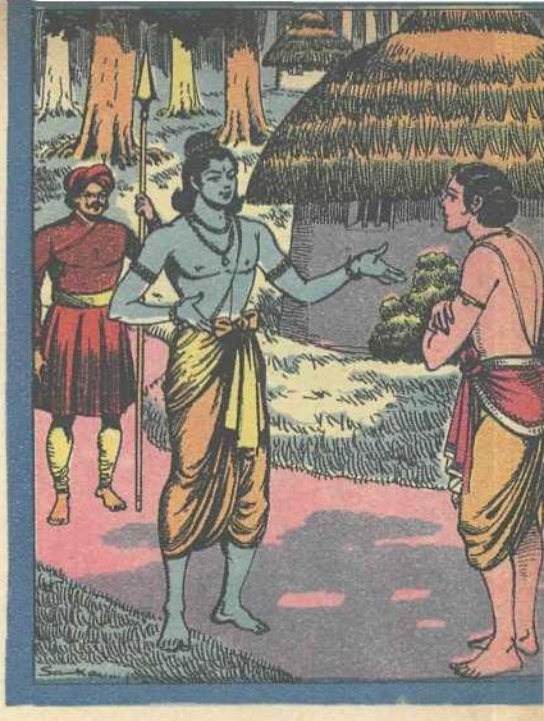

थे। भारद्वाज ने चाहा कि वे उस दिन उसका आतिथ्य स्वीकार करें और अगले दिन ही अयोध्या जायें।

राम ने हनुमान को बुलाकर कहा—"तुम अयोध्या जाओ। रास्ते में श्रृंगवेरपुरं में गुह से मिलो। मेरे कुशलक्षेम के बारे में उसको बताओ। वह मेरा प्राण मित्र है। उससे तुम अयोध्या की खबरें मिलेंगी। वह मेरा कुशलक्षेम जानकर बड़ा खुश होगा। अयोध्या जाकर, सविवरण भरत को हमारे बारे में वार्ता दो, मेरी विजय की खबर सुनकर, भरत के मुँह पर क्या प्रतिक्रिया होती है ध्यान से देखना। इतने समय तक राज्य के भोगों का आनन्द लेने के बाद उन सबको जाता देख, उसे दुख होगा की। इसलिए उसकी प्रतिक्रिया अच्छी तरह परखना। यदि वह राज्य करना चाहे, तो वह राज्य कर सकता है। यदि उसकी यह इच्छा हो, तो हमारे अयोध्या पहुँचने से पहिले ही, हमसे आकर मिलो।"

हनुमान मानव रूप धारण करके, वायु मार्ग से निकल पड़ा। गंगा, यमुना का संगम पार करके, श्रृंगवेरिपुरं पहुँचकर, गुह से मिला। गुह से यह कहकर कि राम कल सवेरे भारद्वाज आश्रम से निकल रहे थे हनुमान आकाशमार्ग से निकल पड़ा। अयोध्या के पास के नन्दी ग्राम में पहुँचा।

वहाँ भरत एक आश्रम बनाकर, तपस्वी की तरह रह रहा था। उसे इस बात का दुख था कि चौदह साल पूरे हो रहे थे पर राम अभी तक न आये थे।

हनुमान ने भरत से मिलकर कहा—राजा, एक शुभ वार्ता लाया हूँ। राम ने रावण को मार दिया है। सीता को

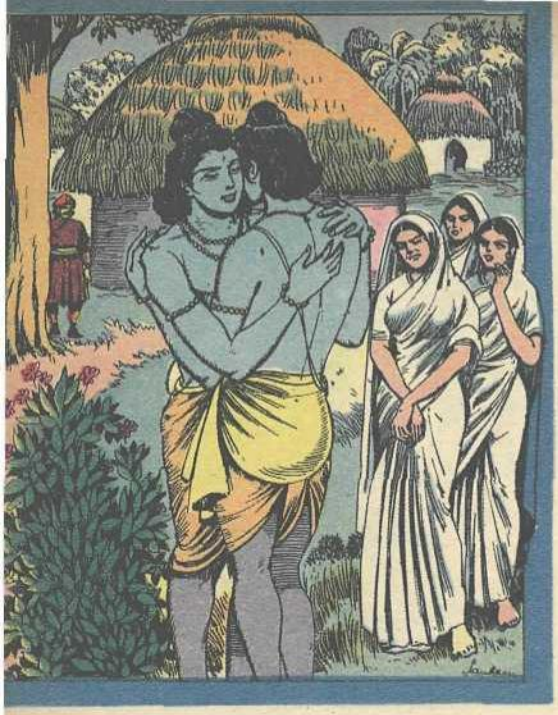

पाकर, महाबली मित्रों के साथ वापिस आ रहे हैं। सीता और राम के साथ लक्ष्मण भी आ रहा है।"

यह सुनते ही, भरत खुशी में मूर्छित हो गया। उसे जब होश आया, तो हनुमान को उसने आलिंगित करके कहा—"समझ में नहीं आता, यह शुभ वार्ता लानेवाले तुम मनुष्य हो, या देवता, इसके लिए तुम्हें एक लाख गौवें, सौ उत्तम ग्राम और सोलह सुन्दर कन्याओं को दान में देता हूँ।"

दोनों काफ़ी देर तक बैठकर बातचीत करते रहे। राम के वनवास में जो कुछ गुजरा था हनुमान ने उस सब के बारे में भरत को बताया।

भरत ने शत्रुघ्न से सारा नगर अलंकृत करने के लिए कहा। वाद्यों का प्रबन्ध करके, राम के स्वागत की व्यवस्था करने के लिए कहा।

नन्दी ग्राम और अयोध्या के बीच का मार्ग साफ़ कर दिया गया। सब जगह पानी और फूल छिड़के गये। राज मार्ग पर तोरण बाँधे गये। चन्दन छिड़का गया।

राज परिवार की स्त्रियाँ, राम के दर्शन के लिए झुन्ड बनाकर, निकल पड़ीं। हजारों हाथियों और घोड़ों को सजाया गया। उन पर सवार होकर, कुछ और कुछ रथों में सवार होकर, निकल पड़े। कौशल्या और कैकेयी के बाद दशरथ की सब स्त्रियाँ पालकी में आयीं। इनके साथ नगरवासी, नन्दी ग्राम में पहुँचे।

राम को काफ़ी देर तक आता न देख भरत को सन्देह होने लगा, कहीं हनुमान ने उसको झूटी खबर तो नहीं दी थी। पर इतने में पुष्पक दिखाई दिया। वह जल्दी ही भूमि पर उतरा। भरत ने

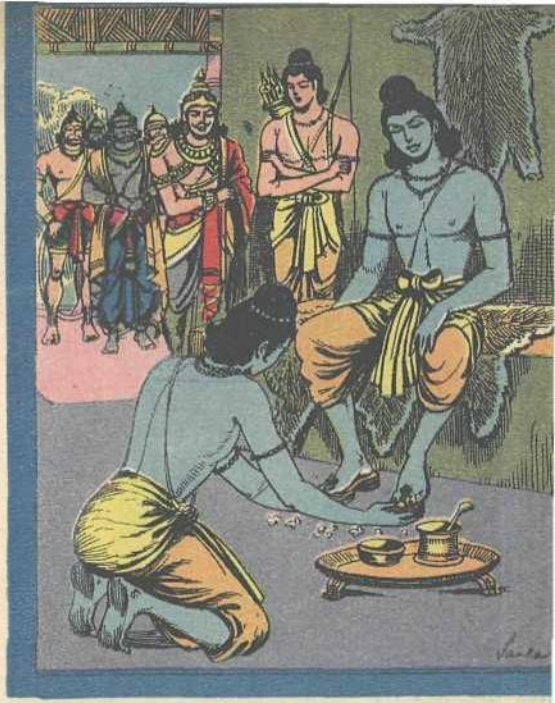

जाकर, राम को नमस्कार किया। राम ने उसका आलिंगन किया।

वानर वीर मानव रूप में थे। भरत ने उन सब से बातचीत की। उसने सुग्रीव से कहा—"हम अभी तक चार भाई थे। अब तुम हमारे पाँचवें भाई हो।" उसने विभीषण की उसकी सहायता के कारण प्रशंसा की।

राम ने कौशल्या व अन्य माताओं और वशिष्ट को नमस्कार किया। भरत ने राम की पादुकाओं को राम को स्वयं पहिनाया। फिर उसने हाथ जोड़कर राम से कहा—"राजा, तुम अपना राज्य ले लो। इस राज्य को तुम्हें फिर वापिस देकर, मेरा जन्म धन्य हो गया है। तुम्हारे जाने के बाद धान्य और सेना आदि दस गुना हो गई है।"

राम ने नन्दी ग्राम पहुँचते ही पुष्पक विमान को कुबेर के पास भेज दिया।

सबके बैठे जाने के बाद भरत ने राम से कहा—"भैया, तुम मेरी माता को सन्तुष्ट करने के लिए राज्य त्याग करके, वनवास के लिए चले गये थे। इस राज्य को मुझे दे गये थे। जो राज्य मेरे पास धरोहर था, उसे तुम ले लो। शायद जानना चाहोगे कि मैं यह राज्य क्यों इतनी जल्दी दे रहा हूँ। इस राज्य का वहन करने में जो शक्ति तुम में है, वह मुझ में नहीं है। हंस के स्थान में भला कौव्वा कैसे उड़े? हमारे पिता ने पुत्रकामेष्टि करके जिस उद्देश्य के लिए तुम्हें जन्मा था वह तुम्हारे राज्य भार स्वीकार करने से ही पूरा हो सकता है। हम सब पर शासन करो।"

राम ने भरत की बात मान ली।

पहिले भरत ने बाद में लक्ष्मण, सुग्रीव, विभीषण ने मंगलस्नान किये। राम के

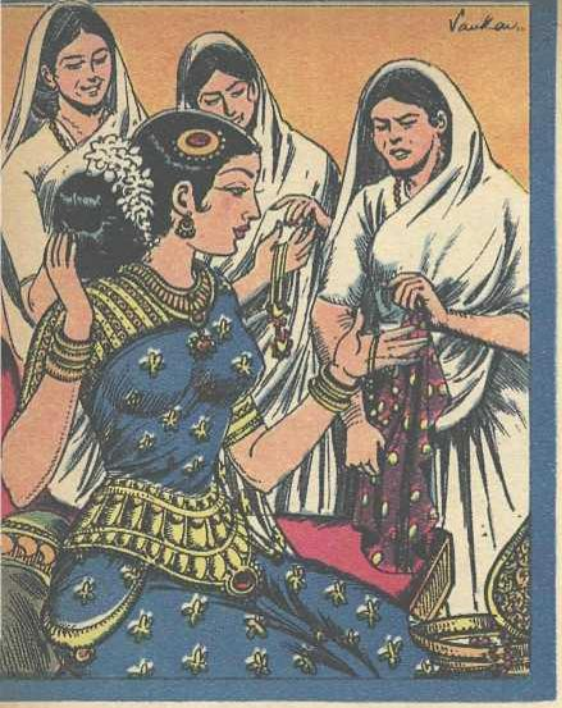

बाल ठीक किये गये। शरीर पर लेप पोते गये। मालायें पहिनायी गईं। पीताम्बर धारण करवाये गये। वे सिंहासन पर आसीन हो गये। दशरथ की और पत्नियों ने सीता का अलंकरण किया। कौशल्या ने वानर पत्नियों का अलंकरण करवाया।

सुमत्र अच्छे घोड़े जोतकर रथ लाया। राम उसमें सवार हो गये। रथ अयोध्या की ओर चल पड़ा। सुग्रीव, हनुमान आदि स्नान करके निकल पड़े। सीता, सुग्रीव की पत्नी के साथ निकलीं।

दशरथ के मन्त्री, वशिष्ट के साथ पहिले ही अयोध्या पहुँच गये थे और पट्टाभिषेक की व्यवस्था कर रहे थे। फिर मन्त्री राम से मिलने आये। राम का रथ आया। भरत सारथी की जगह बैठा था। शत्रुघ्न ने छत्र पकड़ रखा था। लक्ष्मण चामर चला रहा था। विभीषण ने एक और चामर पकड़ रखा था। सुग्रीव शत्रुंजय नामक मत्त हाथी पर सवार था। राम के आते ही शंख बजाये गये। शंख ध्वनि सुन लोग जमा हो गये। जब राम अयोध्या पहुँचे, तो घर घर पर पताका थी। वे सीधे दशरथ के महल में गये। उन्होंने भरत से सुग्रीव के रहने के लिए विशेष व्यवस्था करने के लिए कहा।

सुग्रीव ने महल में पहुँचते ही चार सुवर्ण कलश देकर, चार वानरोत्तमों को देकर, सवेरा होने से पहिले समुद्र का जल लाने के लिए कहा। वे कलश लेकर, आकाश मार्ग से निकल पड़े। इस तरह जानेवालों में थे जाम्बवन्त, हनुमान, वेगदर्शी और ऋषभ।

फिर राम का पट्टाभिषेक हुआ। सीता और राम को रत्नों की पीठिका पर बिठाया

Sankar

गया। वशिष्ट, वामदेव, जाबाली, काश्यप, कात्यायन, सुयज्ञ, गौतम, विजय आदि आठ महर्षियों ने राम का अभिषेक किया। उनके बाद ब्राह्मण कन्या और मन्त्रियों और नागरिकों ने, योद्धाओं ने राम का अभिषेक किया।

शत्रुघ्न ने राम का छत्र पकड़ा। सुग्रीव और विभीषण आदियों ने चामर पकड़े। देवेन्द्र ने वायुदेवता के हाथ सौ कमलोंवाले सोने का हार और नवरत्न हार भेजा।

राम ने ब्राह्मणों को लाख घोड़े, बछड़ेवाली लाख गौवें, उपहार में दिये। तीस करोड़ सोने के सिक्के, वस्त्र, आभूषण आदि दान दिये। सुग्रीव को एक दिव्य काँचन माला दी। सीता को एक मोती का हार दिया। सीता ने हनुमान को दो कपड़े और सुन्दर आभूषण भेंट में दिये।

राम ने सीता को एक मोती का माला देकर कहा—"जिसने तुम्हें अधिक सन्तोष दिया हो, उसे दे दो।" सीता ने उसे हनुमान को दे दिया। हनुमान ने उसे तुरत अपने गले में डाल लिया।

राम ने और वानर वीरों को यथोचित उपहार दिये। पट्टाभिषेक के बाद राम से विदा लेकर, वानर किष्किन्धा और विभीषण लंका वापिस चले गये।

राम ने राज्य का आधा भार लक्ष्मण के कन्धों पर डाला। भरत को युवराज बनाकर राज्य किया। उन्होंने सौ अश्वमेध यज्ञ किये। राम के राज्य में किसी को कोई कष्ट न था। अकाल मरण न था। राम राज्य का अर्थ आदर्श राज्य माना जाने लगा। (युद्धकाण्ड समाप्त)

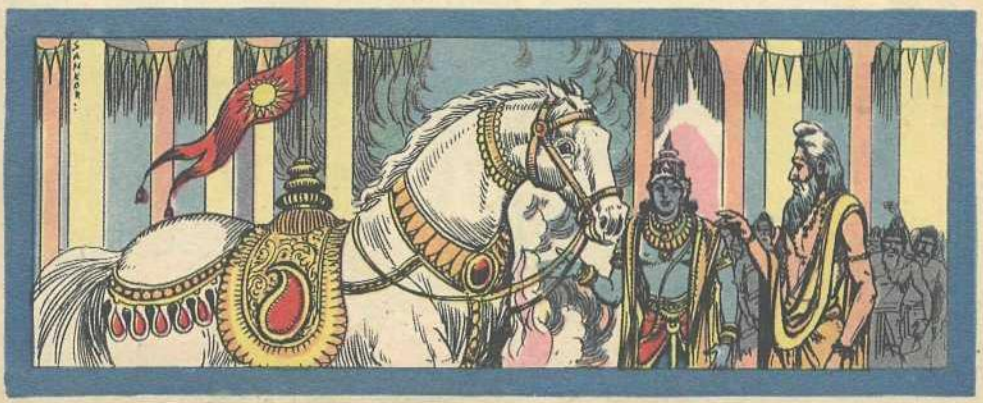

औतम मनु की कथा

उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि नाम की दो पत्नियाँ थीं। उनमें सुनीति का लड़का ध्रुव था। सुरुचि का लड़का उत्तम था। उत्तानपाद सुरुचि को अधिक चाहता था। इसी कारण वह उत्तम को भी अधिक चाहता था और उसने राज्य भी उसी को दे दिया। उत्तम ने ब्रह्म की लड़की बहुला से विवाह किया। बहुला पर वह मुग्ध-सा था। परन्तु बहुला अपने पति को नीची नज़र से देखती।

एक दिन उत्तम, जब कुछ राजकुमारों के साथ मद्य पी रहा था, तो उसने मद्य पात्र अपनी पत्नी को देना चाहा। उसने वह लिया नहीं और मुँह एक तरफ़ फेर लिया। उत्तम का राजकुमारों के सामने अपमान हुआ। इसलिए उसने अपनी पत्नी को वन में भेज दिया। इस पर बहुला का दुखी होना तो अलग, वह यह सोच खुश हुई की उसको पति की शक्ल देखने की नौबत नहीं आयेगी। परन्तु उत्तम, पत्नी के विरह में बहुत छटपटाया। उसने एक और विवाह करने से भी इनकार कर दिया।

कुछ समय बीता, एक बार सुशर्मा नामक ब्राह्मण ने दरबार में आकर कहा—"राजा, मेरी पत्नी को कोई उठा ले गया है। उसका पता नहीं मालूम हो रहा है। तुम उसको खोजकर लाओ।"

"मैं नहीं जानता तुम्हारी पत्नी कौन है? उसे जो उठा ले गया है, उसे भी मैं नहीं जानता।" उत्तम ने कहा।

"मालूम नहीं है, यह कहने मात्र से तो सब कुछ ठीक नहीं हो जाता। हमारे

अन्तिम पृष्ठ

कष्टों को दूर करने की जिम्मेवारी तुम पर है।" सुशर्मा ने कहा।

"तुम अपनी पत्नी के बारे में जानकारी दो। वह कैसी है? उसकी उम्र कितनी है?" राजा ने पूछा।

"उसकी आँखें चौधियायी हुई-सी हैं। ठिगनी है। छोटे हाथ हैं। मुँह धँस-सा गया है। बड़ी बदसूरत है। अधेड़ है। वह सीधी-सादी नहीं है।" सुशर्मा ने कहा।

"क्यों नहीं खुश होते कि ऐसी औरत से पिंड छूटा? क्यों उसे खोजने के लिए कह रहे हो? अरे, एक और विवाह कर लो।" उत्तम ने कहा।

"पत्नी कैसी भी हो उसकी रक्षा का भार तुम पर है। पति, सन्तान के रूप में पत्नी के गर्भ से कई बार पैदा होता है। यदि ऐसी पत्नी की रक्षा न की गई, तो संकट पैदा हो सकता है। गुरु के सामने प्रमाण करके, अग्नि के समक्ष जिससे विवाह किया हो, उस पत्नी को छोड़कर कैसे एक और पत्नी लाऊँ? अग्नि के साथ आयी हुई पत्नी के न होने पर मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा हूँ।" सुशर्मा ने कहा।

यह सुन उत्तम रथ पर सवार होकर कई प्रान्तों में खोजता रहा। आखिर, एक मुनि के आश्रम में गया। उस मुनि ने राजा के लिए एक शिष्य से अर्घ्य लाने को कहा। शिष्य ने, गुरु ने जैसा कहा था, वैसा न किया और उसने कहा—"ज़रा सोचिये तो।"

तब मुनि को राजा की परिस्थिति याद हो आयी। "राजा, एक पखवारे तक कर्म छोड़ दिया जाये तो ब्राह्मण तक अस्पृष्य हो जाता है। तुमने एक साल से अपनी पत्नी को छोड़ रखा है।"

उत्तम यह सुनकर हक्काबक्का रह गया। जब उसने मुनि से अपने काम के बारे में बताया, तो मुनि ने अपनी दिव्य दृष्टि से देखकर कहा—"सुशर्मा की पत्नी को बलाक नाम का राक्षस उठा ले गया है। और उसे उसने कुत्पलावता नामक वन में रख रखा है। तुम उसे ले जाकर उस सुशर्मा को दे दो और यह देखो जो पाप तुम लगा है, वह उस ब्राह्मण को न लगे।"

उत्तम, बलाक की जगह गया। वहाँ, सुशर्मा की पत्नी है यह जानकर, उसने बलाक से पूछा—"तुम इसे क्यों लाये हो?"

"इसका पति प्रति यज्ञ में हम राक्षसों की निन्दा कर रहा है। ताकि उसका यह व्रत असफल हो जाये, इसलिए हम उसकी पत्नी लाये हैं।" बलाक ने कहा। वह उसको, उसके पति के पास पहुँचाने के लिए मान गया।

फिर उत्तम ने मुनि के पास जाकर, कहा—"आप ही ने बताया था कि पत्नी को छोड़ देना कितना बड़ा पाप है। वही बलाक ने एक और रूप में बताया, बताइये मेरी पत्नी कहाँ है?"

"तुम्हारी पत्नी पाताल में है। कपोत राज नामक नाग, उसको प्रेम करके ले गया है। परन्तु उसकी लड़की नन्दा, चूँकि तुम्हारी पत्नी को सौतेली माँ के रूप में नहीं चाहती, इसलिए वह उसके मान की रक्षा कर रही है।" मुनि ने कहा।

राजा घर गया। सुशर्मा को पत्नी से हिल मिलकर रहता देख, उसको बलाक याद हो आया। बलाक, राजा की इच्छा पर, पाताल जाकर बहुला को ले आया। सुशर्मा ने मित्र विन्द नामक यज्ञ सात बार करके, बहुला के कल्मष को नष्ट कर दिया। अब उसे पति पर अत्यन्त प्रेम होने लगा।

जिस बहुला को वह प्रेम करके लाया था, चूँकि उसने उसको पत्नी नहीं बनाने दिया था इसलिए कपोत राज को अपनी लड़की पर बड़ा गुस्सा आया और उसे गूँगा बना दिया। नन्दा के गूँगेपन को हटाने के लिए राजा ने सारस्वत यज्ञ करवाया। नन्दा का गूँगापन जाता रहा। उसने उत्तम और बहुला को आशीर्वाद दिया कि वे मनु को जन्म दें। आशीर्वाद के अनुसार उनके औत्तम नामक लड़का हुआ, जो तीसरा मनु हुआ।

संसार के आश्चर्य :

४४. १६ वीं सदी की घड़ी

यह घड़ी स्विजर्लैन्ड की राजधानी बर्न में है। द्वार के ऊपर की छोटी "ड़ायल" मास और दिन दिखाती है। उसके दायें ओर के भवन पर भालू और मुरगी खेलते हैं। घड़ी के ऊपरले भाग के बुर्ज़ में मनुष्यों के खिलौने घंटा बजाते हैं।